ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

आषाढ़-सावन, संवत् नानकशाही ५४४
वर्ष ५ अंक ११ जुलाई 2012

संपादक : सिमरजीत सिंघ *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ *एम. एम. सी.*

चंदा	
सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60, फैक्स: 0183-2553919

एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

हभे थोक विसारि हिको खिआलु करि ॥
झूठा लाहि गुमानु मनु तनु अरपि धरि ॥
आठ पहर सालाहि सिरजनहार तूं ॥
जीवां तेरी दाति किरपा करहु मूं ॥१॥रहाउ॥
सोई कंमु कमाइ जितु मुखु उजला ॥
सोई लगै सचि जिसु तूं देहि अला ॥२॥
जो न ढहंदो मूलि सो घरु रासि करि ॥
हिको चिति वसाइ कदे न जाइ मरि ॥३॥
तिन्हा पिआरा रामु जो प्रभ भाणिआ ॥
गुर परसादि अकथु नानकि वखाणिआ ॥४॥

(पन्ना ३९७)

आसा राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं कि हे जीव! सभी सांसारिक पदार्थों का मोह त्याग कर केवल एक परमात्मा का ही ख़्याल किया कर अर्थात् उसे ही याद किया कर तथा उसे ही पाने के यत्न किया कर। हे जीव! तू ये सब दुनियावी सम्पत्तियों का झूठा गुमान करना छोड़ दे तथा अपना मन भी, अपना तन भी उस परमेश्वर के आगे अर्पित कर दे अर्थात् अपना अहं आदि सब खत्म करके केवल परमेश्वर के प्रति अर्पण-भाव रख। आठ पहर उस सृजनहार प्रभु की प्रशंसा किया कर तथा उसी की कृपा के आसरे जीवन गुजार। पंचम पातशाह का आगे फरमान है कि हे जीव! तू वही काम किया कर जिससे लोक-परलोक में तेरा मुख उज्जवल हो। प्रभु के सदा स्थिर रहने वाली नाम-भक्ति में वही जुड़ता है जिस पर प्रभु खुद कृपा करे। गुरु जी कहते हैं कि हे जीव! जिस आध्यात्मिक अवस्था वाले हृदय-घर का बिलकुल विनाश नहीं होता, उस हृदय-घर को साफ-स्वच्छ, संवार कर रख। उस साफ स्वच्छ हृदय-घर में परमेश्वर का निवास-स्थान बना जो काल से परे है अर्थात् जो कभी खत्म होने वाला नहीं। शबद की अंतिम पंक्तियों में गुरु जी कहते हैं कि जो जीव परमात्मा को प्यारे अर्थात् अच्छे लगने लग जाते हैं उन जीवों को भी परमात्मा प्यारा अर्थात् स्नेही अर्थात् निकटवर्ती लगने लग जाता है। यह सब गुरु की कृपा द्वारा ही संभव होता है जो कि जीव को परमात्मा के निकटवर्ती होने की युक्ति बताता है तथा इसी गुरु-दर्शायी युक्ति द्वारा जीव परमात्मा की निकटता का आभास करने लग जाता है; उसे परमात्मा को पहचानने वाली दृष्टि मिल जाती है।

संभालो सिंघो! संभालो अपनी विरासत को

सिक्ख इतिहास हक एवं इंसाफ के लिए लड़ने वालों की शहीदियों से भरा पड़ा है। इन शहीदों के इतिहास को संभालने की जिम्मेदारी कौम के वारिसों की होती है। इतिहासकार कड़ी मेहनत कर शहीदों के इतिहास को खोजते तथा शोधते हैं। इनकी मेहनत का सदका ही इतिहास पुस्तकों आदि में संभाला जाता है। ये पुस्तकें पीढ़ी-दर-पीढ़ी सफ़र करती हुई ऐतिहासिक जानकारी बांटती हैं। कौमों के वारिस इनसे जानकारी प्राप्त करके अपने भविष्य को रौशन करते हैं; अपने पूर्वजों के किए कार्यों पर गर्व करते हैं।

यह बात भी प्रत्यक्ष है कि जो कौमें अपनी विरासत, अपना इतिहास नहीं संभालती, वे दुनिया के नक्शे से खत्म हो जाती हैं। कौम के वारिसों का काम जहां इतिहास को पुस्तकों के पृष्ठों में संभालना है, वहीं ऐतिहासिक स्थानों की निशानदेही कर उनका रखरखाव करना होता है। इन स्थानों पर यादगारें कायम करके कौमें अपने इतिहास के प्रति दुनिया के प्रत्येक मनुष्य पर आकर्षक प्रभाव डालती हैं।

सिक्ख कौम आरम्भ से ही मेहनत-मशक़्क़त करने वाली कौम है। सिक्ख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी ने सिक्ख धर्म का प्रचार-प्रसार ही "नाम जपो, किरत करो, वंड छको" के सिद्धांत पर किया है। न किसी से डरना, न किसी को डराना तथा अपने अधिकारों के लिए जूझ मरने की भावना प्रत्येक सिक्ख की नसों में है। जब्र-जुल्म से जूझते हुए सिक्खों के सिरों के दाम लगाये गए। बड़ी संख्या में सिक्खों का कत्लेआम हुआ, घल्लूघारे घटित हुए।

महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य-काल के दौरान सिक्ख कुछ संभले तो इन्होंने अपनी ऐतिहासिक विरासतों को संभालकर यादगारें कायम करने का प्रयत्न किया। यह राज्य ज्यादा देर तक कायम न रह सका। कुछ घटिया सोच के मालिकों की करतूतों के कारण देश अंग्रेजों का गुलाम हो गया। सिक्खों द्वारा कायम की गई यादगारों के माध्यम से शहीदों की शहीदियां ललकार रही थीं कि सिक्ख कौम गुलामी नहीं सहती। इन यादगारों ने सिक्खों को गुलामी के विरुद्ध लड़ने एवं देशवासियों पर हो रहे जुल्म के विरुद्ध लामबंद होने की प्रेरणा दी। सिक्खों ने शहीदियों के अंबार लगा दिए, जेलें भर दीं, अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया। आखिर अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना पड़ा, परंतु यह चालाक

कौम (अंग्रेज) भारत छोड़कर जाते समय जहां भारतवासियों में फूट का बीज बो गई, वहीं साथ ही सिक्खों का बहुत सारा बहुमूल्य ख़ज़ाना भी साथ ले गई। आजकल ये अमूल्य वस्तुएं इंग्लैंड के ब्रिटिश संग्रहालय में सिक्खों की बहादुरी की कहानियां सुना रही हैं।

पिछले कुछ वर्षों से सिक्खों में अपनी अन्य नयी विरासती यादगारें बनाने के लिए जागृति पैदा हुई है। वर्ष १९९९ ई. में सिक्ख कौम द्वारा खालसे की जन्म-शताब्दी बड़ी शानो-शौकत से मनाई गई। इस मौके सिक्खों ने श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर अपने वारिसों के लिए 'विरासत-ए-खालसा' का शिलान्यास किया। अब यह अजूबे के रूप में तैयार होकर हमारे सामने आ चुका है। दर्शकों की भीड़ इसकी लोकप्रियता को दर्शा रही है। आधुनिक डिज़ीटल तकनीक के प्रयोग द्वारा बना यह अजूबा दुनिया भर के अजूबों में शामिल हो चुका है। पंजाबियत एवं सिक्खों की विरासत को यह बाखूबी पेश कर रहा है। चप्पड़चिड़ी के मैदान में बाबा बंदा सिंघ बहादर द्वारा की गई 'सरहिंद फ़तह' की याद में 'फ़तह बुर्ज' का निर्माण किया गया है। सन् १७४६ ई. में काहनूंवान की छंब (झिरी) में सिक्खों के साथ घटित हुए 'छोटे घल्लूघारे' की यादगार तथा सन् १७६२ ई. में कुप्प रुहीड़ की धरती पर घटित 'बड़े घल्लूघारे' की यादगार कायम करनी अपने वारिसों के लिए ऐतिहासिक जागृति पैदा करने की ओर अहम कदम है।

६ जून, १९८४ ई. का दिन सिक्खों के लिए बड़ा हृदयविदारक था। इस दिन श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी दिवस मनाने के लिए संगत गुरुद्वारा साहिबान में इकट्ठी हुई थी। अचानक ही कर्फ़्यू लगाकर सारे पंजाब का संपर्क दूसरे राज्यों से काट दिया गया। भारत की जंगी फौजों ने पंजाब में एक ही समय ३८ गुरुद्वारा साहिबान पर हमला कर दिया। हज़ारों की संख्या में सिक्ख अपने गुरु-घरों की रक्षा करते शहीद हो गए। इस वर्ष इस दुखांत की २८वीं वर्षगांठ पर शहीदों की यादगार कायम करने के लिए शिलान्यास किया गया है। यह यादगार श्री अकाल तख़्त साहिब के पास ही गुरुद्वारा थड़ा साहिब के ज़मीनदोज हॉल में तैयार की जाएगी। इस यादगार को बनाने की जिम्मेदारी दमदमी टकसाल के मुखिया बाबा हरनाम सिंघ खालसा ने ली है। यह यादगार भी बनकर हमारे इतिहास को हमारे वारिसों के हवाले करने का कार्य भली-भांति करेगी। यह कार्य तो अभी शुरुआत मात्र ही है। इस दिशा में अभी बहुत कार्य होना शेष है। हमें इस कार्य के प्रति बड़ी जागृति से यत्न करना पड़ेगा; गांव-गांव लहर के रूप में कार्य करना पड़ेगा; हमारी विरासतों को नष्ट करने वालों को आड़े हाथ लेना पड़ेगा।

सिक्खों के बारे में आज तक बयान किया जाता रहा है कि सिक्ख इतिहास बनाते तो हैं किंतु संभालते नहीं। यह किए गए तथा किए जा रहे कार्य सिक्खों में आई जागृति को पेश करते हैं। आज सिक्ख सारे संसार में फैल चुके हैं तथा ये विरासती यादगारें दुनिया भर के लोगों को सिक्खों का गौरवमयी इतिहास दर्शाने में भरपूर सहायक सिद्ध होंगी। ☸

हमारे लिए प्रेरणास्रोत है श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जीवन

*-डॉ. परमजीत कौर**

मीरी-पीरी के मालिक, परोपकारी, शूरवीर, धर्म प्रचारक, नम्रता के पुंज श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जीवन अज्ञानतवश गलत मार्ग पर पड़े मनुष्यों के लिए प्रकाश-स्तंभ हैं। भाई गुरदास जी गुरु पातशाह की प्रभावशाली शख़्सियत के बारे में लिखते हैं :

--गुर गोविंदु गोविंदु गुरु हरिगोविंदु सदा विगसंदा।
अचरज नो अचरज मिलै विसमादै विसमाद मिलंदा। (वार २४:२१)

--दसतगीर हुइ पंज पीर हरि गुरु हरि गोबिंदु अतोला।
दीन दुनी दा पातिसाहु पातिसाहां पातिसाहु अडोला।
पंज पिआले अजरु जरि होइ मसतान सुजाण विचोला।
तुरीआ चढ़ि जिणि परम ततु छिअ वरतारे कोलो कोला। (वार ३९:३)

मानवता को कुचले एवं दबाये जाने से रोकने के लिए मानव हृदय में ऐसा जज़्बा पैदा होना आवश्यक है जिसके एहसास से न कोई किसी से डरे और न कोई किसी को डराये। बलशाली से डरकर कोई अपने आप को नीचा न समझे। गुरु नानक पातशाह द्वारा इस एहसास का बीज बोया गया। गुरु नानक साहिब के बाद पंचम पातशाह तक गुरु साहिबान ने नीच कहलाये जाने वाले लोगों के हृदय में स्वाभिमान की भावना को जगाया, उस एहसास के बीज को पनपने की जगह दी तथा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने इसे वृक्ष का रूप देने का प्रयत्न किया। हथियार उठाने के लिए मन की जागृति जरूरी है। जब तक मन में यह भावना जागृत न हो कि 'कोई नीचा या ऊंचा नहीं, सभी समान हैं', हथियार नहीं उठाए जा सकते। स्वाभिमान तथा आत्मविश्वास की भावना पैदा होने के बाद ही अपनी रक्षा करने एवं दूसरों को जुल्म से बचाने के लिए हथियार उठाए जा सकते हैं। गुरु साहिब ने समझाया कि अपनी रक्षा खुद की जा सकती है। जंग-शक्ति, जन-शक्ति को मज़बूत करने के लिए होनी चाहिए न कि जन-शक्ति को कमज़ोर करने के लिए एवं बेगुनाहों पर जुल्म करने के लिए।

गुरु साहिब ने समझाया कि धर्म की रक्षा के लिए वीर-रस आवश्यक है। उत्साहमयी जीवन जीने वाला ही सत्य के लिए जान दे सकता है, कायर नहीं। गुरु जी के समय ढाढी वीर रस पैदा करने के लिए वारें गाते थे :

सुनि अबिदुल ढाढी चलि आयो।
भए सुभट तिन को जसु गायो।
जिस के सुनति बीर रस जागे।
काइर सो पि लरे नहिं भागे ॥३०॥
(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, रासि ४, अंसू ४४, पृष्ठ २४१३)

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जीवन यह दर्शाता है कि जुल्म का मुकाबला तथा आत्मिक अगुआई दोनों ही काम साथ-साथ किए जा सकते

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर-१३५००१ (हरियाणा), फोन : ०१७३२-२२४९८८*

हैं। इससे यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि अपने प्रति, पंथ के प्रति, कौम या देश के प्रति हो रहे अत्याचार, बेइंसाफ़ी आदि के विरुद्ध मुकाबला करने के लिए तथा धर्म की रक्षा करने के लिए मन को प्रभु के साथ जोड़ना अनिवार्य है। अगर मन प्रभु के साथ जुड़ा रहता है तो हाथों से बुरा काम हो ही नहीं सकता। ऐसे में हाथ में पकड़ा हथियार जुल्म के विरुद्ध ही उठ सकता है। गुरु जी ने जंगें लड़ीं, मानव-आज़ादी के लिए एवं स्वाभिमान की रक्षा करने के लिए न कि राज्य हथियाने के लिए या किला फ़तह करने के लिए।

मेहनत की कमाई से जीवन-यापन करना सिक्ख पंथ का बुनियादी उसूल है। ग्वालियर के किले में नज़रबंद होने पर गुरु जी ने तीन दिन तक भोजन नहीं किया, क्योंकि वह भोजन जुल्म से इकट्ठे किए गए धन का ही हिस्सा था। उन्होंने संगत में गुरसिक्खों द्वारा मेहनत करके लाये धन से तैयार किए गए भोजन को ही स्वीकार किया। भाई संतोख सिंघ लिखते हैं :

श्री मुख ते फुरमावनि कीनि।
इह भोजन हम खाहिं कबी न।
वहिर जाइ मिहनत करि लयावहु।
रसद खरीदहु बिपनी जावहु ॥४६॥
तिसते तयार अहार करीजहि।
हित भोजन के सो हम दीजहि।
नांहि त रहि हैं पौन अहारी।
जबि लगि बासहिं दुरग मझारी ॥४७॥
(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, रासि ४, अंसू ५९, पृष्ठ २४७६)

तथा :

स्री मुखि कहा किरति करि लयावो।
सो भोजनु हम कौ करवावो ॥४८५॥
(गुर बिलास पातशाही छेवीं)

आज के गुरसिक्ख कहलाने वाले हम लोग इस उसूल की पालना कितनी कर रहे हैं, यह विचारने की जरूरत है।

ग्वालियर के किले में नज़रबंद निराश राजाओं को गुरु पातशाह उत्साहित करते एवं हौसला रखने की प्रेरणा देते। गुरु जी के रहन-सहन, कथनी करनी का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने भी संगत में जुड़ना आरंभ कर दिया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब सदा खिले हुए एवं उत्साहित रहते। जब अन्य राजाओं ने पूछा कि आप नज़रबंद होते हुए भी इतना खुश रहते हो तो उनका जवाब था कि मेरे शरीर को राजा बंदी बना सकता है, मन को नहीं। मेरा मन आज़ाद है। मेरा मन हर समय प्रभु से जुड़ा रहता है और खिला रहता है। प्रभु का भाणा (रज़ा) मानना ही मेरा धर्म है।

जेल का दारोगा हरिदास भी गुरु जी की पवित्रता एवं संयम को देखकर बहुत प्रभावित हुआ। उसने चंदू द्वारा जहर देकर गुरु जी को नुकसान पहुंचाने की साजिश से गुरु साहिब को सुचेत कर दिया। दुश्मनों को भी अपना बना लेने वाले महान गुरु जी के सिक्ख आज अपनों को भी क्यों बेगाना बनाए जा रहे हैं? यह अपने आप की पड़ताल करने पर ही जाना जा सकता है।

ग्वालियर के किले में बंदी बने हुए राजाओं के दर्द को गुरु जी ने पूरी तरह महसूस किया तथा वज़ीर ख़ान को कहकर भेजा कि राजाओं की रिहाई के बिना वे भी किले से बाहर नहीं जा सकते। भाई संतोख सिंघ लिखते हैं :

श्री हरि गोविंद सुनति बखाना।
अटक परी इक कठन महाना ॥१०॥
जबि हम प्रविशे दुरग मझारी।
भयो कैदीअनि को सुख भारी।
खान पान ते भए सुखारे।
छुटनि भरोसा मन महिं धारे ॥११॥
अबि सुनि लीनो शाहु हकारे।
परे शरनि बहु बिनै उचारें।
रावरि बिना न हम गति काई।
कै मारहु कै देहु जिवाई ॥१२॥

हमरे सदा प्रतग्गया इही।
शरनि परे कहु तयागनि नहीं।
(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, रासि ५, अंसू ६५, पृष्ठ २४९८-९९)

गुरु जी का यह कथन कोई दिखावा नहीं था। वे तो सबका कल्याण सोचते थे तथा सबको आज़ाद करवाना चाहते थे। इसी लिए जहांगीर के यह कहने पर कि जो गुरु जी का पल्ला पकड़कर बाहर आ सकते हैं, वे रिहा कर दिए जायेंगे, गुरु जी ने बावन कलियों वाला चोला सिलवाया, जिसकी एक-एक कली पकड़कर सारे राजा बाहर आ गए। गुरु जी को उसी समय से 'बंदी छोड़ दाता' के नाम से भी याद किया जाता है। दूसरों के लिए सोचने की यह भावना अगर हमारे अंदर आ जाये तो सामाजिक बुराइयों को बहुत हद तक दूर किया जा सकता है।

गरीबों की बाजू पकड़ना सिक्ख धर्म का जरूरी अंग है। 'गरीब का मुंह गुरु की गोलक' के कथन को नये सिरे से समझने, समझाने तथा दृढ़ करवाने की बहुत जरूरत है। भाई गड़ीए ने कश्मीर की संगत द्वारा भेंट की गई सारी रकम जरूरतमंदों तथा गरीबों को बिना किसी भेदभाव से बांट दी। थैली में बचा हुआ सवा रुपया तथा कश्मीर की संगत के मुखिये के हाथों से लिखी हुई फ़िहरिस्त गुरु जी को सौंप दी। गुरु जी ने फ़िहरिस्त पढ़कर भाई गड़ीए की ओर प्यार से देखकर फरमाया, "मुझे पहुंच गई।" सिक्ख इतिहास लिखता है कि गुरु जी अपने पास कुछ भी नहीं रखते थे, समस्त भेंटा बांट देते थे।

गुरु जी के लिए गुरु-घर तथा राजा-रंक सब समान हैं। लाहौर आने पर जहांगीर नूरजहां समेत श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर के दर्शन करने के उपरांत श्री अकाल तख़्त साहिब के दीवान में बैठकर कीर्तन सुनता रहा। 'गुर बिलास पातशाही छेवीं' के अनुसार :

जहांगीर तह जाइ होइ अधीन बैठत भयो।
पाछै दूरि हटाइ सुनत शबद धरि प्रेम कौ ॥६५०॥
(अध्याय ८)

दीवान की समाप्ति के बाद गुरु जी उसको मिले तथा जहांगीर को भी वही भोजन छकाया गया जो संगत छकती थी, राजा के लिए कोई खास तकल्लुफ नहीं किया गया। जब जहांगीर ने राज्य-कोष से खर्च देने की इच्छा प्रकट की तो गुरु जी ने, "यह सब संगत का है, संगत ही इसको चलाती है," कहकर मना कर दिया। इस प्रकार राजा से ज्यादा संगत को सम्मान दिया गया।

यही नहीं, गरीब माता भागभरी के हाथों का प्यार तथा श्रद्धा से बनाया गया खद्दर का कुर्ता स्वीकार करना; डरोली के एक गांव में रहते गरीब सिक्ख भाई साधू तथा उसके पुत्र भाई रूपा के पास छागल का शीतल जल पीने के लिए कड़कती धूप में पहुंचना; भाई कट्टू शाह की मांग पर शहद न देने पर खुद शहद को स्वीकार न करना आदि दृष्टांत सिक्खों के साथ गुरु साहिब के प्यार के सूचक हैं। भाई गुरदास जी ने कितनी सुंदर उपमा दी है कि लाखों से लाखों बावन चंदन गुरु जी के चरण-कंवलों के चरणोदक से हुए हैं :

लख गड़ाड़ि कड़ाह विचि त्रिसना दझहिं सीख परोआ।
बावन चंदन बूंद इकु ठंढे तते होइ खलोआ।
बावन चंदन लख लख चरण कवल चरणोदकु होआ।
पारब्रहमु पूरन ब्रहमु आदि पुरखु आदेसु अलोआ।
हरिगोविंद गुर छत्रु चंदोआ ॥
(वार ३९:४)

आज समाज में फैले दुराचार, वैर-विरोध, ईर्ष्या की जगह सदाचार, सांझीवालता तथा प्यार जाग सकता है, मात्र जरूरत है गुरु जी की जीवन-ज्योति के प्रकाश में अपने आप को देखने, जांचने एवं पहचानने की।

छठमु पीर बैठा गुरु भारी

*-डॉ. मनजीत कौर**

श्री गुरु नानक देव जी की छठी ज्योति व मीरी-पीरी के मालिक श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की समूची शख़्सियत को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। भाई गुरदास जी ने अपनी श्रद्धा-भावना को व्यक्त करते हुए इस संदर्भ में कितने सार्थक शब्द लिखे हैं :

पंजि पिआले पंजि पीर
छठमु पीर बैठा गुरु भारी।
अरजनु काइआ पलटि कै
मूरति हरिगोबिंद सवारी।
चली पीड़ी सोढीआ
रूपु दिखावणि वारो वारी।
दलि भंजन गुरु सूरमा
वड जोधा बहु परउपकारी॥ (वार १:४८)

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जन्म २१ आषाढ़, सं. १६५२ तदनुसार १९ जून, १५९५ ई. को श्री गुरु अरजन देव जी के गृह में माता गंगा जी की कोख से श्री अमृतसर जिले के वडाली नामक ग्राम में हुआ। पिता श्री गुरु अरजन देव जी ने उन्हें 'पूत भगत गोबिंद का' कहा। उन्होंने अकाल पुरख का शुक्राना करते हुए कहा :

वधी वेलि बहु पीड़ी चाली॥
धरम कला हरि बंधि बहाली॥ (पन्ना ३९६)

पंचम् पातशाह की शहादत एक क्रांतिकारी मोड़ :
शहीदों के सिरताज श्री गुरु अरजन देव जी की गौरवमयी एवं लासानी शहादत सिक्ख इतिहास की एक विलक्षण घटना है जिससे सिक्ख इतिहास में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया। इतिहासकारों के विचारानुसार गुरु साहिब ने शहीदी पाने हेतु लाहौर जाते वक्त अपने सपुत्र श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब, जिनकी आयु उस समय मात्र ११ वर्ष थी, को गुरगद्दी सौंप कर स्पष्ट बता दिया था कि "बुरा वक्त आ गया है। बदी की शक्तियां मूलगत मानवीय हकों को खत्म करने पर तुली हुई हैं। श्री गुरु नानक देव जी का घर सदैव सत्य, भाईचारे एवं मानव-आज़ादी का समर्थक रहा है। लोगों को वहमों-भ्रमों से निकालने का काम हमने अमन व शांत तरीके से किया है, मगर इसका नतीजा कुछ विपरीत निकला है। जालिमों की आत्मा को जगाने के लिए जुल्म सहना व्यर्थ है। अब नेकी और बदी की ताकतों की टक्कर होगी। स्वयं शस्त्र धारण करो तथा अपने अनुयायियों को भी शस्त्र पहनाओ। जालिमों का तब तक विरोध करो, जब तक कि वे अपने आपको सुधार न लें।"

इन शब्दों की गूंज सिक्खों में जंगल की आग की तरह फैल गई। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने मीरी तथा पीरी की दो कृपाणें धारण कीं और फौज भी रख ली। 'संत' के साथ-साथ 'सिपाही' रूप भी धारण कर लिया। इस प्रकार सिक्खों को अब 'संत-सिपाही' का रूप प्रदान हुआ।

इस परिवर्तन को समक्ष रखते हुए इतिहासकार

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३

'ट्रंप' ने श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी को एक ऐतिहासिक मोड़ से तुलना दी है, क्योंकि गुरु जी की शहादत के बाद सिक्खों में भारी परिवर्तन आ गया था।

विश्व-इतिहास गवाह है कि शहीदों का खून कभी व्यर्थ नहीं जाता, क्योंकि इससे धर्म के नए अध्याय की शुरुआत होती है। एक शायर के शब्द कितने सार्थक हैं :

शहीद की जो मौत है वो कौम की हयात है।
हयात भी हयात है और मौत भी हयात है।

'हयात' यानि 'ज़िंदगी' अर्थात् शहीद की मौत कौम को नई ज़िंदगी देती है, उसमें नव-प्राणों का संचार करती है। एक कवि ने तो यहां तक लिखा है :

जहां शहीदों का रक्त गिरता है,
वहीं से उगता है सवेरा।
जहां जलाता देह दीपक,
वहां न आता फिर अंधेरा।

इस प्रकार पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की लासानी शहादत के उपरांत बाबा बुढ्ढा जी के निर्देशन में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने शीघ्र ही शस्त्र-विद्या में निपुण होकर सिपाहियों की सुसंगठित सेना तैयार कर ली। आत्म-सुरक्षा तथा सुगठित सैनिक संगठन हेतु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने राजनीति में धर्म का समावेश कर पवित्र, दूरदर्शी, सहयोगात्मक सत्याचरण-युक्त माहौल कायम किया, जिसमें पाखंड, अंधविश्वास, असत्य, जातिगत भेदभाव के लिए लेशमात्र भी स्थान न था। समन्वयवादी दृष्टिकोण का प्रत्यक्ष प्रमाण काल की सीमाओं से परे श्री अकाल तख़्त साहिब का निर्माण था। श्री अकाल तख़्त साहिब की स्थापना तथा मीरी-पीरी का सिद्धांत सिक्ख पंथ में धर्म और राजनीति के सुंदर समन्वय की विलक्षण मिसाल बना। गुरु जी के मीरी-पीरी के सिद्धांत का निरूपण ढाडी अब्दुल्ला ने इस प्रकार किया है :

दो तलवारां बद्धीआं,
इक मीरी दी इक पीरी दी।
इक अजमत दी, इक राज दी,
इक राखी करे वजीर दी।

श्री अमृतसर में श्री हरिमंदर साहिब के समक्ष श्री अकाल तख़्त साहिब की स्थापना केवल वास्तुशिल्प का ही उत्कृष्ट नमूना नहीं है बल्कि वास्तव में 'अकाल तख़्त' है; कालातीत परमेश्वर का सिंहासन है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब श्री हरिमंदर साहिब में धार्मिक उपदेश देते तथा श्री अकाल तख़्त साहिब पर राजनीतिक-व्यवहारिक विषयों पर उपदेश देते। श्री अकाल तख़्त साहिब सिक्ख पंथ की धर्मनीति एवं राजनीति को जोड़ने वाला एक सक्षम माध्यम है। इसकी नींव स्वयं गुरु साहिब ने रखी थी। इसका निर्माण-कार्य गुरु साहिब ने भाई गुरदास जी व बाबा बुढ्ढा जी से करवाया। इसके निर्माण में किसी भी मिस्त्री आदि का सहयोग नहीं लिया गया, यथा :

कर अमरदास श्री सतिगुरु पुंन प्रसादि बरताइ।
प्रिथम नींव सई गुर रखी अबचल तखत सहाइ ॥२६॥
चौपई : किसी राज नहि हाथ लगायो।
बुढ्डा औ गुरदास बनायो।

(गुर बिलास पातशाही छेवीं, अध्याय ८)

गुरु पातशाह ने अपने जीवन-काल में चार धर्म-युद्ध लड़े तथा चारों में ही विजय प्राप्त की।

बंदी छोड़ दाता : समय का बादशाह जहांगीर गुरु साहिब की बहादुरी एवं युद्धों की तैयारी से बुरी तरह भयभीत हो गया। उसने कपट से गुरु जी को ग्वालियर के किले में कैद कर लिया। इससे पूर्व ५२ हिंदू राजा भी जहांगीर की कैद

में ग्वालियर के किले में नज़रबंद थे। उधर जहांगीर किसी गंभीर रोग से ग्रसित हो गया। उसका दिन का चैन तथा रातों की नींद चली गई। साईं मीयां मीर जी ने जहांगीर से कहा कि "तुमने बहुत बड़ा गुनाह किया है, खुदा के नूर को कैद किया है, खुदा तुम्हें कभी माफ नहीं करेगा।"

यह सुनकर जहांगीर घबरा गया और उसने गुरु साहिब को रिहा करने का आदेश जारी कर दिया।

गुरु जी ने स्पष्ट उत्तर दिया कि "जब तक ५२ राजाओं को भी उनके साथ रिहा नहीं किया जाता तब तक वे भी रिहा नहीं होंगे।" बादशाह ने कहा, "जितने भी राजा आपका चोला (दामन) पकड़ कर बाहर आ सकेंगे उन्हें रिहा कर दिया जायेगा। गुरु साहिब ने ५२ राजाओं के लिए ५२ कलियों वाला चोला सिलवाकर पहन लिया। समस्त राजा उस चोले की एक-एक कली को पकड़ कर गुरु जी के साथ बाहर आ गए। ५२ राजाओं को कैद से मुक्त करवाने के कारण उन्हें 'बंदी छोड़ दाता' भी कहा जाता है। इस विशेष दिन को 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में बड़ी श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ दीपों की रोशनी करके मनाया जाता है।

विविध धार्मिक स्थल एवं नगरों का निर्माण : गुरु जी ने श्री अमृतसर में श्री अकाल तख़्त साहिब के अलावा गुरुद्वारा श्री कौलसर साहिब आदि का निर्माण करवाया। श्री हरिगोबिंदपुर साहिब, कीरतपुर साहिब, महिराज (बंठिडा) आदि शहर बसाये। जहां एक तरफ सिक्खों के नाम-सिमरन एवं ठहरने हेतु धर्मशाला बनवाई वही मुसलिम श्रद्धालुओं के नमाज पढ़ने हेतु मसजिद भी बनवाई। लाहौर के किले के पास, जहां श्री गुरु अरजन देव जी को शहीद किया गया था, वहां 'डेहरा साहिब' नामक स्थान कायम किया।

गुरु साहिब ने धर्म प्रचारार्थ यात्राएं भी कीं। १६४४ ई में परम ज्योति में विलीन होने से पूर्व अपने पोते (गुरु) हरिराय साहिब को गुरगद्दी पर विराजमान कर बाबा बुढ्डा जी के सपुत्र भाई भाना जी से गुरगद्दी स्थानांतरण करने की रस्में पूरी करवाईं। गुरु साहिब कीरतपुर साहिब में ६ चेत, संवत् १७०१ (३ मार्च, १६४४ ई.) को परम ज्योति में विलीन हो गए।

कविता

गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी

गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी, अति उत्तम और अति ऊंची।
परिपूर्ण फ़लसफ़ा एक, विचार-वस्तु जिसमें सच-सूची।
जीवन का आधार स्थायी, शिक्षा निर्मल शबद गडूची।
प्रभु-जाप प्रभु-भाव सिखाये, संपदा समाई पड़ी समूची।
गहरी कमाई गुरु साहिबान की, सतिसंगत महिमा बीच परूची।
मानव-कल्याण महान संदेशा, समानता ज्योति जले साथ सरूची।

-डॉ सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर, मो ९४१७१-७५८४६

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का गुरु-परंपरा में योगदान

*-प्रो. जोगिंदर सिंघ**

दस गुरु साहिबान में से श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब सांसारिक दृष्टि से सबसे अल्प आयु के थे तथा गुरगद्दी पर 'गुरु' रूप में विराजमान भी सबसे कम समय रहे थे। ८ सावन, सं. १७१३ तदनुसार ७ जुलाई, १६५६ ई को श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का जन्म माता किशन कौर तथा पिता श्री गुरु हरिराय साहिब के गृह, (शीशमहल) कीरतपुर साहिब की धरती पर हुआ था। ६ कार्तिक, सं. १७१८ को गुरु हरिराय साहिब के बड़े सपुत्र रामराय, के मुकाबले छोटे सपुत्र श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को गुरगद्दी पर बिठा, पहले अपना गुरु-पिता का प्यार तथा अपनी आशीष प्रदान की, फिर गुरु परंपरा की विरसे की संभाल के लिए जागरूक किया। आखिर समकालीन तथा सरकारी गुरु-दोखियों की पहचान करवाकर गुरु दरबार की सारी जिम्मेदारी सौंप, सभी ओर यह ऐलान कर दिया कि गुरु नानक साहिब की गुरगद्दी के वारिस तथा मालिक श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब हैं; यही गुरु परंपरा के आठवें पातशाह हैं। इतिहास साक्षी है कि पांच वर्ष की ये बाल शख़्सियत श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के रूप में जब गुरगद्दी पर विराजमान होकर सारे भू-मंडल में जगमग करने लगी तो सांसारिक सोच वालों ने भ्रम-भुलावे को भी प्रकटाया तथा किंतु-परंतु भी किया कि ये 'बाल-गुरु' गुरगद्दी के आत्मिक, सामाजिक, सभ्याचारक तथा राजनीतिक कर्त्तव्यों को पूर्व गुरु साहिबान की तरह कैसे निभायेंगे? घरेलू एवं सरकारी विरोध तो पहले से भी बढ़ गया परंतु श्री गुरु हरिक्रिशन का तीन वर्ष (१६६१-६४ ई) गुरु-सिंहासन का कर्त्तव्य सहज ही स्पष्ट करता है कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का आत्मिक रंग, विवेक बुद्धि-प्रकाश, चिंतन-दृष्टि, गुण-रासि तथा पद-पदवी बिलकुल उसी तरह की थी जैसे पहले गुरु साहिबान की थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जब 'चंडी दी वार' में अपने पूर्वत: गुरु साहिबान का अभिनंदन करने लगते हैं तो इस तरह लगता है कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का 'गुरु-कर्त्तव्य तथा योगदान' उनकी प्रतिबद्धता का विशेष कारण बनता है।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने जन्म से ही गुरु-पिता का प्यार, माता की आशीष तथा संगती वातावरण में खुद को गुरु-रंग, नाम-रंग तथा सच-रंग में रंग लिया था। गुरु-रंग, नाम-रंग तथा सच-रंग को भक्ति बोली में आत्मिक-रंग ही कहा जाता है। आत्मिक रंग वाला अमृत वेले जागता है, नाम-सिमरन में जुड़ता है, संगती वातावरण में सहज तथा विगास मानता है; अंदर से और बाहर से रसिक एवं वैरागी हो जाता है। नम्रता, मिट्ठत (मिठास) तथा सेवा उनका गुण व्यवहार बन जाता है। हउमै-अहंकार, लोभ-लालच, भ्रम, पाखंड, पाप एवं दुख से वह पूरी तरह से मुक्त हो जाता है। यही

**बी-२/५२, जनकपुरी, नई दिल्ली-११०००१*

कारण है कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब अमृत वेले जागते, बाणी-अभ्यास में जुड़ते, संगती वातावरण में बैठकर गुरु-पिता से पूर्व गुरु साहिबान का साखी इतिहास तथा गुरबाणी उपदेश सुनते। गुरगद्दी पर विराजमान होने के उपरांत आप भी इसी नियम के अनुसार गुरु-दरबार का क्रिया-कर्म निभाते रहे। वास्तव में यही आत्मिक रंग था, जिसने बाल-उम्र में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के गुरगद्दी पर बैठने से न गुरगद्दी के गौरव एवं प्रभाव को कम होने दिया तथा न ही सिक्ख संगत को किसी निराशा एवं उदासीनता की ओर जाने दिया। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने गुरु-दरबार की सारी क्रिया को केवल गुरु-मर्यादा के अनुसार चलाया ही नहीं, बल्कि विवेक बुद्धि का ऐसा प्रकाश तथा प्रसाद बांटते कि सिक्ख संगत बंधनों से वेपरवाह होने लग गई तथा 'आत्मिक बल' गुरु एवं गुरु-दरबार का पहचान-चिन्ह बन गया।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की गुरु-सिंहासन पर विराजमान होने पर आयु चाहे पांच वर्ष ही थी किंतु उनके हृदय, चिंतन एवं व्यवहार, विवेक बुद्धि के प्रकाश के कारण ही श्री गुरु हरिराय साहिब ने उन्हें गुरु-सिंहासन के लिए योग्य एवं लायक स्वीकार किया था। गुरु-परंपरा में परवानगी का निशाना हमेशा उसको ही प्राप्त हुआ है जिसका अंदर-बाहर विवेक-बुद्धि के प्रकाश से श्रृंगारा हुआ है। विवेक बुद्धि वाला निरवैर भी होता है तथा निर्भय भी होता है। 'सच' उसका प्रथम पहचान-गुण होता है। झूठी खुशामद करना, लोभ-लालच अधीन गुलामी स्वीकार करना, समकालीन राज्य-सत्ता तथा हाकिमों से राजनीतिक समझौता करना, पद-पदवी के लिए साजिशें रचना तथा करामातों का दिखावा करना, यह सब कुछ विवेक बुद्धि वाले तथा सात्विक राजा को न पसंद होता है तथा न ही प्रवान होता है। गुरु-सिंहासन पर बैठने के लिए पिता-गुरु श्री गुरु हरिराय साहिब के होते हुए भी रामराय ने नीच तथा कपटी चरित्र का प्रकटावा किया। इस विवेकहीन चरित्र के कारण ही श्री गुरु हरिराय साहिब ने रामराय को तिरस्कारा एवं फटकारा और उसको संदेशा भेजा कि "रामराय! जिस दिशा की ओर तेरा मुंह है, उस दिशा ही ओर ही चला जा, हमारे माथे न लगना।" श्री गुरु हरिराय साहिब के ये शब्द उनकी विवेक-बुद्धि, शख़्सियत के प्रतीक भी हैं तथा सपुत्र श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के लिए गुरु-परंपरा में रहने के लिए आदेश-रूप भी हैं। यही कारण है कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने गुरु-सिंहासन पर बैठकर जहां बिलकुल सात्विक, निर्भय एवं निरवैर चरित्र का प्रकटावा किया वहां गुरु-काल में न समकालीन राज्य-सत्ता से कोई राजनीतिक समझौता किया, न पराधीनता स्वीकार की, न खुशामद की और न ही खुशामदी को समीप आने दिया। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने गुरु-सिंहासन का आत्मिक, सामाजिक, सभ्याचारक तथा राजनीतिक, सारा कार्य गुरु-परंपरा, गुरु-मर्यादा के अनुसार ही किया।

गुरु-सिंहासन पर विराजमान होने पर श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को जहां पिता-गुरु श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपना प्यार दिया, आशीष प्रदान की, परंपरागत रूप में कुछ आदेश भी दिए, वहीं एक आशीर्वाद यह भी दिया कि जो श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के दर्शन-दीदार करेगा, उसके सब दुख ही नहीं, बल्कि उसके क्लेष एवं संकट भी खत्म हो जायेंगे। ऐतिहासिक ग्रंथों ने इस आशीर्वाद को निम्नलिखित वाक्यांश-- "नही दरसहिं, दरसावहिं" द्वारा जागृत किया है। 'नहीं

दरसहिं' संकेत है-- रामराय के प्रति। श्री गुरु हरिराय साहिब का आदेश था कि रामराय के दर्शन नहीं करने, उसकी भेजी भेटायें एवं सिरोपाउ स्वीकार नहीं करने। 'दरसावहिं' पद श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के प्रति आशीर्वाद का प्रतीक है कि उनके दर्शन-दीदार के साथ सब दुख, क्लेष एवं संकट खत्म हो जायेंगे। गुरु साहिबान को देखकर समूचे जीवन-व्यवहार में गुरु साहिबान जैसा हो जाने से निश्चय ही दुख, क्लेष एवं संकट मिट जाते हैं। गुरबाणी की स्पष्ट गवाही है :

सतिगुर का दरसनु सफलु है जेहा को इछे तेहा फलु पाए ॥
गुर का सबदु अंम्रितु है सभ त्रिसना भुख गवाए ॥
(पन्ना ८५०)

अउखद आए रासि विचि आपि खलोइआ ॥
जो जो ओना करम सुकरम होइ पसरिआ ॥
हरिहां दूख रोग सभि पाप तन ते खिसरिआ ॥
(पन्ना १३६३)

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का गुरु-काल-जीवन साक्षी है कि उन्होंने अनेकों ही दुखित एवं पीड़ित जीवों को आत्मिक, मानसिक एवं शारीरिक सुख-शांति प्रदान की। यहां तक कि दिल्ली में बैठकर चेचक के रोग से लोगों को बचाने के लिए अपना शरीर भी मानव सेवा हेतु भेंट चढ़ा दिया।

दस गुरु साहिबान के मन, वचन एवं कर्मों से, खासकर गुरु-बाणी तथा गुरु-इतिहास से सहज ही स्पष्ट होता है कि गुरु-परंपरा शुद्ध रूप में 'धर्म' को स्थापित तथा जागृत करने के लिए ही प्रकाश रूप में इस लोक में प्रकट हुई थी। गुरु-परंपरा का सारा जीवन ही नहीं सारा बल भी धर्म-आदर्श की पूर्ति हेतु समर्पित था। धर्म-आदर्श की पूर्ति हेतु ही श्री हरिमंदर साहिब की सृजना तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना हुई थी। गुरु-परंपरा द्वारा धर्म के प्रसंग में जो कुछ भी सृजित एवं स्थापित किया जा रहा था, वो सब का सब मानव-जीवन को धर्मी तथा आदर्श बनाने के लिए ही था। धर्म एवं मानव-मूल्य ही गुरु-परंपरा का केंद्रीय-बिंदु थे। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने भी धर्म की शुद्ध भावना के साथ जुड़े रहने के लिए जहां अपने सिक्खों को हुकमनामे भेजे वहीं धर्म-दोखियों एवं धर्म विरोधियों की कूड़-क्रिया (मंद-कार्यों) को पूरे ज़ोर से फटकारा। जैसे सारी गुरु-परंपरा जात-पात, ऊंच-नीच तथा अमीर-गरीब की बांट को पसंद नहीं करती थी, इसी तरह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब भी वर्ण-आश्रम तथा जात-पात के विभाजन को कुष्ठ कहकर जड़ से उखाड़ने का निरंतर यत्न करते रहे। विवेक बुद्धि-प्रकाश प्रदान करते समय श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने कहा कि मानव रूप में हर कोई ज्ञान प्राप्त कर सकता है। समकालीन जीवन में कन्या मारना, तंबाकूनोशी, जुआ खेलना तथा शराब पीना, ये मंद आदतें बहुत व्यापक थीं। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब अपनी प्रचार-यात्रा में खुले तौर पर कहते थे कि ये मंद आदतें धर्म विरोधी हैं, इंसान के धर्मी बनने में रुकावटें हैं, इनको त्यागो! गुरु साहिब ने यहां तक आदेश दिए थे कि मंद आदतों वाला, खासकर कन्या मारने वाला संगत में नहीं बैठ सकता। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने अपने गुरु-पिता के आदेश के अनुसार धर्म-दोखी धीरमल्ल और रामराइयों को भी न गुरु-दरबार के पास आने दिया तथा न ही उनके साथ रोटी-बेटी की सांझ रखी। श्री गुरु अमरदास जी तथा श्री गुरु अरजन देव जी के समय से, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी धर्म प्रचार आदि के लिए

मसंद स्थापित थे, श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने उनके साथ पूरा मेल-मिलाप रखा। जिन मसंदों के बारे में गुरु-दरबार में शिकायतें थीं, श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने उनको ठीक करने के लिए मात्र चेतावनियां ही नहीं भेजीं, बल्कि उनको सुधारने के प्रबंध भी किए। गुरु-परंपरा तथा सिक्ख लहर को स्थापित एवं विकसित करने में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का योगदान किसी तरह से भी कम नहीं।

गुरु-सिंहासन चाहे करतारपुर में था; खडूर साहिब, गोइंदवाल, श्री अमृतसर, कीरतपुर साहिब या दिल्ली में, गुरु साहिबान जहां विराजमान होते वे स्थान सहज ही पावन एवं पवित्र हो जाते। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की याद में स्थित 'गुरुद्वारा बंगला साहिब' का अपना ही ऐतिहासिक महत्व है। यह गुरुद्वारा बंगला साहिब का स्थान ही है जहां श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने विराजमान होकर संगत को दर्शन-दीदार दिए; गुरु-बाणी-उपदेश सुनाकर लोगों को सुख, शांति तथा सहज प्रदान किया। इतिहासकार साक्षी हैं कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का इतना प्रभाव बढ़ा कि राज्य-सत्ता का मुख्य अधिकारी 'औरंगा' भी एक दिन श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के दर्शन करने तथा मेल-मिलाप के लिए गुरु-दर की दलहीज़ पर आधी घड़ी खड़ा रहा, परंतु गुरु साहिब ने धर्म-दोखी होने के कारण दर्शन देने एवं मुलाकात करने से साफ़ इंकार कर दिया। राजा जय सिंघ ने चाहे कई यत्न किए किंतु यह स्पष्ट है कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने गुरु परंपरा के अनुसार राज्य-सत्ता के अधिकारियों से कोई सांझ-समझौता नहीं किया। ३० मार्च, १६६४ ई को जब श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने अपना शारीरिक-काल निकट जाना तो दिल्ली से ही उन्होंने 'बाबा बकाला' का संकेत देकर, गुरु-सिंहासन के नवम पातशाह के तौर पर श्री गुरु तेग बहादर साहिब का चुनाव किया था। गुरु-सिंहासन के लिए श्री गुरु तेग बहादर साहिब का चयन निश्चित ही समस्त पक्षों से योग्य तो था ही बल्कि गुरु-परंपरा तथा सिक्ख लहर को संभालने एवं अगुआई प्रदान करने के समर्थ भी थे। गुरु-परंपरा एवं सिक्ख लहर को योग्य, लायक तथा समर्थ अगुआ श्री गुरु तेग बहादर साहिब के रूप में प्रदान करना, यह अष्टम बलबीरा श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की विवेक बुद्धि का फैसला है। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का गुरु-सिंहासन-काल चाहे बहुत कम है परंतु उनकी पद-पदवी तथा योगदान अन्य गुरु साहिबान की तरह बड़ा एवं प्रभावशाली है।

(अनुवादक-- स. गुरप्रीत सिंघ भोमा)

अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें।

-संपादक।

श्री हरिक्रिशन धिआईऐ जिसु डिठै सभि दुखि जाइ

*-डॉ. बलबीर सिंघ**

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने जीवन की अल्प आयु में ही लोक-सेवा के जो कार्य किये उससे सिद्ध हो जाता है कि लोक-सेवा के कार्यों के लिए लंबी आयु का होना कोई आवश्यक नहीं। दिल्ली में गुरु जी के आगमन से पूर्व ही हैजे और चेचक का प्रकोप चरम सीमा पर था। शायद ही कोई घर ऐसा था जो इन महामारियों से पीड़ित नहीं था। गुरु महाराज अपने बड़े भाई रामराय द्वारा बादशाह औरंगजेब को उनके विरुद्ध भड़काने पर राजा जय सिंह के माध्यम से मिले बुलावे पर कीरतपुर साहिब से दिल्ली आये थे। कीरतपुर साहिब में अनेकों सगे-सम्बंधियों और श्रद्धालुओं ने उन्हें रोका भी और कुछ संभावना भी प्रकट की कि हो सकता है कि बादशाह उन्हें कैद कर ले। कुछ ने कहा कि चेचक की महामारी के कारण हज़ारों दिल्ली वासी पलायन कर अन्य स्थानों पर जा रहे हैं ऐसे में गुरु जी को वहां नहीं जाना चाहिए। गुरु साहिब बादशाह के डर से और महामारी के प्रकोप से विचलित होने वाले नहीं थे। उनके सामने लोक-सेवा ही परम उद्देश्य था। उनके साथ कई श्रद्धालु भी चल पड़े। मार्ग में अंबाला के निकट पंजोखरा ग्राम (अब कसबा) के पंडित लाल चंद के अहंकार को उन्होंने तोड़ा। लाल चंद को गुरु जी की विद्वता पर शक था। गुरु महाराज ने एक साधारण-से आदमी को बुलवाकर उससे पंडित लाल चंद के हर प्रश्न का उत्तर से दिलवाया। गुरु जी ने साबित कर दिया कि विद्या-ज्ञान अर्जित करने पर किसी विशेष वर्ग का एकमात्र अधिकार नहीं है। 'पंडित' वह नहीं जो 'ब्राह्मण' वंश में जन्म ले अपितु 'पंडित' वो है जो ज्ञानवान हो तथा लोगों में बिना किसी भेदभाव के ज्ञान बांटे।

इसके पश्चात कई दिनों की यात्रा तय करके मार्ग में कई स्थानों पर सतसंग करते हुए, मानवता, भाईचारे व प्रेम का उपदेश देते हुए श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब दिल्ली आ गये। बादशाह के कहने पर राजा जय सिंह ने गुरु जी की परीक्षा लेकर देखना चाहा कि उनमें सही और गलत के भेद को समझने की कितनी योग्यता है। राजा ने रानी को सेविकाओं के वेश में सबके साथ बिठा दिया। फिर गुरु महाराज से कहा कि आप रानी को पहचानें। गुरु जी मुस्कराते हुए हाथ में छड़ी लिए एक-एक सेविका के पास से गुजरते और कहते कि "यह नहीं! यह भी नहीं!!" रानी के सिर पर छड़ी रख कर गुरु जी ने कहा कि "यह है असल रानी।" गुरु जी ने रानी को 'माता' कह कर संबोधित किया। गुरु जी दिल्ली में कई दिनों तक दरबार लगाकर उपदेश देते रहे। उन्होंने परमात्मा की महत्ता बताते हुए मानवता को

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

**२१२, ढुडियाल अपार्टमेंट, मधुबन चौंक, पीतमपुरा, दिल्ली-११००३४, मो ९८९९१-६१७७७*

मीरी-पीरी : मानववादी परिप्रेक्ष्य

*-डॉ. बलजीत कौर**

मानवीय हितों की पालना एवं रक्षा धर्म का प्रारंभिक कर्त्तव्य है। धर्म का सम्बंध केवल परालौकिक कल्याण के साथ ही नहीं बल्कि धर्म ने तो मनुष्य के लौकिक जीवन का कल्याण भी करना है। धर्म-चिंतन मनुष्य को क्रियाहीनता तथा शिथिलता की शिक्षा नहीं देता बल्कि इसकी मान्यता यह है कि सामाजिक आदर्शों एवं मानव-जीवन-मूल्यों की प्रतिष्ठा धर्म के आधार पर ही संभव है। सच्चा धर्म सामाजिक आदर्शवादियों की इस बात से सहमत है कि शाश्वत जीवन इसी धरा पर संभव है। मानवीय प्यार धर्म का मूल आधार है। मनुष्य ने अपने जीवन का विकास धर्म के सबल-मानववादी माध्यम से ही करना है। विश्व-मानवता की प्राप्ति हेतु आदर्श तथा यथार्थ का सुमेल 'सच-धर्म' का सार-तत्व है।

धर्म के विरुद्ध सबसे बड़ा दोष यह लगाया जाता है कि यह सम्पन्न वर्ग के स्वार्थी साधनों की प्राप्ति में सहयोगी भूमिका निभाता है। यह गरीबों को गरीबी तथा साधारण जनमानस को दासता में संतुष्ट रहने के लिए कहता है तथा उसके शोषण को ईश्वरीय विधान का अंग बना देता है . . . आदि। ये सारे विचार 'सच-धर्म' से अनजान लोगों की मनोकल्पनाएं हैं। धर्म तो सामाजिक न्याय तथा समानता का स्रोत है। धर्म मनुष्य को सभ्य जीवन प्रदान करता है। अमानवीय प्रवृत्तियों का सर्वनाश केवल धर्म की ओट (आश्रय) लेने से ही संभव है। धर्म निमाणों को मान, निताणों को तान, निओटों को ओट देता है।

गुरमति-चिंतन सबको *"एकु पिता एकस के हम बारिक"* मानता हुआ *"कुदरति के सभ बंदे"* कहकर एक समान समझता है, क्योंकि उसकी शिक्षा के अनुसार हर कोई उसी ज्योति से प्रकाशमान है और सबके साथ समान व्यवहार करना ही मानवीय परिप्रेक्ष्य की सच्चाई है। गरीब, निमाणी, रौंदी, असहाय, मज़लूम जनता का कद समाज में ऊंचा उठाकर उसमें आत्म-रक्षा की भावना भरना भी इंकलाबी महापुरुषों का कार्य है। जनता की कमज़ोर दिमागी-मानसिक अवस्था को दुरुस्त करने के लिए उनमें वीर-रस पैदा करना होता है। शक्ति व सबलता से ही अपना अस्तित्व, विधि, समाज, नीति तथा धर्म को कायम रखा जा सकता है। मानवता को एक श्रृंखला में पिरोना है। नीच कहे जाने वालों को ऊंचा उठाकर मुख्य धारा में लाना मानवता की महान सेवा है। आत्मिक शूरवीरता विषय-विकारों पर काबू पाना है। दुनियावी शूरवीरता गरीबों की रक्षा करने, जुल्म के विरुद्ध लड़ने, मानव-ज़िंदगी की रक्षा करने तथा मानव-अस्तित्व को बरक़रार रखने में निहित है।

गुरमति चिंतन एक उच्च-आदर्शक चिंतन है, जिसको गुरु नानक साहिब ने प्रचारित एवं प्रसारित किया। पंचम पातशाह तक यह चिंतन सदाचारक गुणों की शिक्षा देता हुआ एक शांत सरिता की तरह बहता रहा। पंचम पातशाह सिक्ख इतिहास के पहले पावन शहीद हुए हैं, जिन्होंने आदर्शों को बचाने के लिए असहनीय एवं अकथनीय कष्ट सहारते हुए अद्वितीय कुर्बानी दी। गुरु जी को गर्म तवी पर बैठाया गया, लेकिन शांत, प्रेम-स्वरूप

Govt. National P.G. College, Sirsa (Haryana)

पंचम पातशाह उच्चारण करते रहे :
तेरा कीआ मीठा लागै ॥
हरि नामु पदारथु नानकु मांगै ॥ (पन्ना ३९४)

श्री गुरु अरजन देव जी ने गर्म तवी पर बैठकर बताया कि सच की स्थाप्ति हेतु अगर कुर्बानी भी करनी पड़े तो इससे गुरेज़ करना बुज़दिली है। लोगों के दिल दहल गए तथा उनमें आत्म-रक्षा का एहसास जागा। छठम पातशाह ने अन्याय का ख़ातिमा करने के लिए मीरी तथा पीरी दोनों शक्तियों का प्रयोग करने का ऐलान किया। श्री अकाल तख़्त साहिब स्थापित कर अन्याय के विरुद्ध मुगल बादशाहत को ललकारा तथा सिक्ख धर्म के अस्तित्व को बरक़रार रखा।

छठे पातशाह ने दो तलवारें पहनी, शस्त्र तथा घोड़े रखने शुरू किए और लोहगढ़ नामक किला बनवाया। शाहजहां की फौज से टक्कर लेने के लिए सिक्खों ने तेग चलाने की कला सीखी। अपने गुरु के दर्शाए पद-चिन्हों पर चलकर सिक्ख सच एवं शांति की स्थाप्ति के लिए, ज़ुल्म तथा अत्याचार को ख़त्म करने के लिए तैयार हो गए। सिक्ख संगत में आपसी प्यार, एकता, संगठन-शक्ति बढ़ी, शस्त्र-विद्या का शौक जाग पड़ा तथा सच्चाई के लिए डट जाने की हिम्मत जीवित हो गई। इसके साथ ही गुरु-घर के लिए श्रद्धा, प्रेम, सत्कार बढ़ा। पंचम पातशाह की शहादत कुर्बानी की चर्म सीमा थी। इसके बाद छठम पातशाह ने कृपाण पकड़ी, सिक्खों को सिपाही बनाया तथा मुगलों के साथ जंग किए। भाई गुरदास जी ने मीरी-पीरी के मालिक के बारे में इस प्रकार लिखा है :

पंजि पिआले पंजि पीर छठमु पीरु बैठा गुरु भारी।
अरजनु काइआ पलटि कै मूरति हरिगोबिंद सवारी। . . .
दलि भंजन गुरु सूरमा वड जोधा बहु परउपकारी ॥
(वार १:४८)

छठम गुरु जी जहां 'दलि भंजन' शूरवीर थे, वहां परोपकारी भी थे। छठम पातशाह जी ने पीरी को मीरी की रंगत देकर उसके मानववादी स्वरूप को परिपूर्ण किया। छठम पातशाह की कोई भी जंग दौलत, ताकत, ज़मीन या किसी अन्य स्वार्थ के लिए नहीं थी। आपने मानव-अस्तित्व, धर्म-अस्तित्व को बरक़रार रखने की नयी व्यवहारिक विधि अपनाई। सदियों की गुलामी के कारण लोगों में कायरता की भावना आ गई थी। गुरु जी ने इस कायरता को ख़त्म करके लोगों में स्व-अस्तित्व की रक्षा के लिए वीरता की भावना पैदा की। नम्रता की रखवाली के लिए, दैवी-मूल्यों की रखवाली के लिए वीरता जरूरी है।

गुरु जी सच्चे राज्य-योगी थे अर्थात् बादशाही शानो-शौकत के होते हुए भी वे साधू वृत्ति के धारणी थे। आप जी ने धर्म तथा राजनीति को एक जगह इकट्ठा किया, मुगलों के साथ जंग किये। उनकी मीरी-पीरी मानववादी थी। *"जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै"* उनका आदर्श था। उनकी मीरी-पीरी सर्वसांझ की परिचायक थी। पंचम पातशाह तथा नवम पातशाह ने शांतचित्त कुर्बानी दी। छठम पातशाह ने तेग उठाई तथा स्व-अस्तित्व की रक्षा के लिए तेग का प्रयोग कर लेने की शिक्षा दी।

मानववादी परिप्रेक्ष्य से यह स्पष्ट है कि मीरी-पीरी समय की सार्थक जरूरत थी, आत्म-रक्षा के लिए इसकी अत्यंत आवश्यकता थी। यह समय की मांग थी। छठम पातशाह ने 'पीरी' के मानववादी स्वरूप को पूरी तरह से कायम रखा तथा दीन-दुखियों, दर्दमंदों की सेवा की। आप दीन-दुखियों को उनके घर जाकर मिलते, उनके दुख-दर्द मिटाते थे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने ग्वालियर के किले में से बावन राजाओं को रिहा करवाने की सेवा निभाई। अब 'पीरी' केवल उपदेश देना ही नहीं बल्कि 'मीरी' का साथ पाकर वो जुल्म के खिलाफ़ शस्त्रबद्ध होकर, टक्कर लेकर जनता को राहत पहुंचाने का भी काम करने लगी, इज्जत की रक्षा करने का फर्ज़ भी निभाने लगी। छठम पातशाह ने श्री हरिमंदर साहिब, श्री

अमृतसर के सामने एक ऊंचा राज्य-सिंहासन तैयार करवाकर उसका नाम 'अकाल बुंगा' रखा। आप जी इस स्थान पर सुबह-शाम दीवान लगाकर संगत में वीर-रस की भावना प्रकट करते थे। भाई गुरदास जी ने इस भावना को अपने शब्दों में इस प्रकार अंकित किया है :

खेती वाड़ि सु ढिंगरी किकर आस पास जिउ बागै।
सप पलेटे चंनणै बूहै जंदा कुता जागै।

(वार २६:२५)

नेकी तथा धर्म की रक्षा के लिए गुरु जी ने सिक्ख संगत का बाहरी जीवन बदला। समय की मुगल हकूमत सिक्ख धर्म को धरती पर से ख़त्म कर देना चाहती थी। बादशाह जहांगीर तो साफ मानता है : "मैंने ताज-तख़्त का मालिक बनते ही इस झूठ की दुकान को बंद करने की सोची और हुक्म दिया कि उसको (गुरु अरजन साहिब को) किसी बहाने गिरफ़्तार करके, यातनायें देकर मार (शहीद) दिया जाये, उसकी जायदाद ज़ब्त की जाए।"

मानव-अस्तित्व की रक्षा हेतु हथियारबंद होना मानववाद का ही एक रूप है। सत्ताहीन जनसमूह को शक्ति प्रदान करना, उसका मनोबल कायम करना, उसको आत्म-रक्षा के योग्य बनाना धार्मिक मानववाद ही है। छठम पातशाह ने सिक्खों को महान, बलवान, प्रभावशाली सेनापतियों की कौम का रूप दिया। मीरी-पीरी के मालिक छठम पातशाह समदृष्टि की मिसाल थे। आप किसी धर्म, जाति, संप्रदाय या शख़्सियत के विरोधी नहीं थे बल्कि बुराई, जुल्म, ज़ालिम तथा अन्याय के विरोधी थे। गुरु जी ने मानववादी संकल्पों की रक्षा के लिए निडर तथा शूरवीर योद्धा तैयार किए; शस्त्रों का प्रयोग धर्म, मज़लूमों, संतों-महापुरुषों तथा आत्म-रक्षा के लिए किया। जब शांति स्थापित करने के लिए सारे प्रयत्न असफल हो जाएं तो उस समय इनका प्रयोग शोभा देता है।

सदाचारक जीवन की मांग केवल मानव से ही की जाती है, क्योंकि वो चेतन प्राणी है। मनुष्य के अस्तित्व की रक्षा के लिए कर्मवादी सदाचार, चढ़दी कला का सदाचार अपनाना है; निराशा-भावना पर काबू पाकर, बलवान मानसिकता का धारणी होकर मानव-मूल्यों की रक्षा करनी है। मानव-मूल्यों की रक्षा करना कड़ी साधना है। यह साधना ही धर्म-चिंतन का मुख्य पहलू है।

इस विचार को समेटते हुए यह कहा जा सकता है कि धर्म के जीवन-मूल्यों के प्रसार के लिए बल की जरूरत है। बलहीन कौम निर्लज्जता की खाई में जा गिरती है तथा अपना अस्तित्व गंवा बैठती है। समाज में व्याप्त असमानता, अन्याय तथा स्वार्थ को खत्म करने के लिए बल की जरूरत है; मानसिक सबलता जरूरी है। राज्य-सत्ता से विहीन होने के कारण बौध मत को देश-निकाला मिल गया था। दूसरी तरफ, यूरोप के सम्राटों के ईसाई मत ग्रहण करने पर यह बड़ी तेजी से समस्त महाद्वीपों में फैल गया। स्पष्ट है कि धर्म के जीवन-मूल्यों को प्रकट करने के लिए, धर्म की रक्षा के लिए बल की जरूरत है। दैवी गुणों का प्रसार करने वालों में भी बल की जरूरत है। अगर उनके पास बल, शक्ति नहीं है तो सत्य की विजय असंभव है।

छठम पातशाह ने सिक्खों को दिमागी तथा जिस्मानी रूप से निर्भय योद्धा बनाया। उनमें मुगल शासकों का मुकाबला करने की अद्वितीय शक्ति भरकर देश की महान सभ्याचारक विरासत की रक्षा की। इस तरह अपने देश, अपनी कौम की रक्षा करके महान मानववादी संकल्पों को सार्थक सिद्ध किया। सिक्ख इतिहास को यह उनकी अद्वितीय देन है।

(अनुवादक-- स. गुरप्रीत सिंघ भोमा) ❁

शहीद भाई मनी सिंघ जी

*-बीबी मलकिंदर कौर**

सिक्ख कौम का संक्षेप इतिहास कुर्बानियों एवं शहीदियों की लंबी दासतां है। लंबे समय बाद लिखे गए इतिहास में कमियां तथा भ्रम स्वाभाविक ही आ जाते हैं। सिक्ख इतिहास में गुरु साहिबान के साथ-साथ सिक्ख परंपरा की सेवा-संभाल एवं प्रसार में सबसे पहला तथा सम्माननीय नाम भाई गुरदास जी का है। इसी शृंखला में दूसरा आदरणीय नाम भाई मनी सिंघ जी का है। भाई मनी सिंघ जी अठारहवीं सदी के सिक्ख शहीदों की माला के अद्वितीय मोती हैं जिन्होंने अपना बंद-बंद कटवा कर संकट काल में सिक्ख धर्म की रिवायतों की शान व गौरव को कायम रखा।

भाई मनी सिंघ जी का जीवन सातवें, आठवें, नौवें एवं दसवें सतिगुरु जी के नेतृत्व एवं देख-रेख में बीता। सातवें सतिगुरु जी के ज्योति-जोत समाने के बाद भाई साहिब आठवें पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की सेवा में उपस्थित रहे। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जब दिल्ली में ३० मार्च, १६६४ ई को ज्योति-जोत समा गए तो भाई मनी सिंघ जी गुरु जी की माता, माता सुलक्खणी (किशन कौर) जी को साथ लेकर बकाला गांव में नौवें पातशाह की सेवा में उपस्थित हुए। इस समय भाई साहिब की आयु २० वर्ष की थी। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शरण में रहते हुए भाई साहिब ने गुरबाणी की पोथियों की प्रतिलिपियां करने एवं करवाने तथा गुरमति साहित्य के लेखकों को उत्साहित करने का महान कार्य संभाला। इस साहित्य-प्रवीणता के बारे में 'शहीद बिलास' में यूं लिखा है :

तेग बहादर गुरू ढिग चक्क नानकी माहि।
बाणी पढ़ै सुणे बाणी लिखे लिखाहि।

नौवें सतिगुरु जी ने धर्म की रक्षा तथा अधर्म को रोकने के लिए जब दिल्ली में शहीदी प्राप्त करने के लिए अनंदपुर साहिब से प्रस्थान किया तो उन्होंने भाई मनी सिंघ जी को दशम पातशाह की सेवा में रहने का हुक्म किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सेवा में रहते हुए भाई मनी सिंघ जी कुछ समय लंगर की सेवा करते और ख़ाली समय में गुरु साहिब से गुरमति आदि की शिक्षा लेते। एक तो भाई मनी सिंघ जी खुद विद्वान थे; दूसरा, वे पूर्ण गुरसिक्ख थे और तीसरा, गुरु साहिबान के निकट रहने का अवसर भी उन्हें प्राप्त हुआ। इन सब बातों ने मिलकर उनके जीवन को ढाला।

भाई मनी सिंघ जी ३५ वर्ष की आयु में पढ़ने-पढ़ाने, लिखने-लिखाने वाले विद्वान बनकर सामने आते हैं। 'शहीद बिलास' में लिखा है :

आयू पैंती बरख की, मनी सिंघ की आइ।
लिखे लिखाइ पोथीआं, मन महि बहु उतसाइ।

भाई चौपा सिंघ द्वारा लिखित 'रहितनामे' के अनुसार, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने करतारपुरी सोढियों से श्री गुरु अरजन देव जी वाली श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ संवत् १७३५ में मंगवाई थी और उन्होंने बीड़ देने से इंकार

कर दिया था। इससे स्पष्ट है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की आज्ञा से भाई मनी सिंघ जी श्री गुरु ग्रंथ साहिब की प्रतियां तैयार करवाने लग गए थे।

राजा मेदनी प्रकाश के निमंत्रण पर जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी नाहन गए तो भाई मनी सिंघ जी भी गुरु साहिब के साथ थे। वहां ५२ कवि गुरु साहिब के दरबार में रहते थे और भाई मनी सिंघ जी उनमें से एक थे। इस बात की पुष्टि ज्ञानी गिआन सिंघ विरचित 'पंथ प्रकाश' में से भी हो जाती है :

कवी बवंजा थे गुर पास।
उन मै गनना इस की खास।

भाई मनी सिंघ जी की विद्वता का सदका श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा साजने के बाद अमृतधारी सिक्ख संगत की विनती को स्वीकार करते हुए भाई मनी सिंघ जी को श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी तथा अकाल बुंगे (श्री अकाल तख़्त साहिब) का मुखी नियुक्त करके भेजा। भाई साहिब ने श्री हरिमंदर साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश किया और वहां गुरमति मर्यादा का प्रवाह चलाया। अपने ग्रंथी-काल तथा उससे पहले समय में भाई मनी सिंघ जी की अधिक रुचि गुरबाणी की कथा करके सिक्खी सिद्धांतों एवं परंपराओं की व्याख्या करने की रही। वे कथा-वार्ता को धर्म प्रचार का एक प्रभावशाली अंग समझते थे। इससे उन्हें उनके ज्ञान का सदका 'ज्ञानी' कहकर सम्मानित किया जाता था। कथा करने के अलावा वे गुरबाणी के अर्थ भी पढ़ाया करते थे। उनसे पढ़ने वालों की शिष्य-परंपरा 'ज्ञानी संप्रदाय' कहलवाई और वह अब तक चली आ रही है।

भाई मनी सिंघ जी के नाम के साथ गुरबाणी एवं गुर-इतिहास की व्याख्या, व्याख्यान से सम्बंधित जो रचनाएं जोड़ी जाती हैं उनका विवरण इस प्रकार है :

(अ) पोथियों की लिखाई, पावन दमदमी बीड़, दसम ग्रंथ लिखवाया।

(क) साखियों की रचना (गिआन रतनावली, भगत रतनावली, गुरबिलास पातशाही छेवीं तथा गुरबिलास पातशाही दसवीं।

(स) फुटकल रचनाएं, जैसे-- जपु जी दा टीका, शरधा पूरन ग्रंथ, श्री गुरू ग्रंथ साहिब दीआं उथानकावां ते इक चिट्ठी।

भाई मनी सिंघ जी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सबसे निकटवर्ती एवं विश्वासपात्र थे। भाई मनी सिंघ जी ने गुरु साहिब का जंग के मैदान में भी साथ दिया। १६८९ ई में जब भंगाणी का युद्ध हुआ तो भाई मनी सिंघ जी ने अन्य गुरसिक्खों के साथ मिलकर शूरवीरता के जौहर दिखाए। १६९० ई में जब नदौण की जंग में भीम चंद ने गुरु साहिब को मदद के लिए पुकारा तब उसकी सहायता के लिए भाई मनी सिंघ जी तथा अन्य वीर बहादुर गुरसिक्खों को साथ लेकर गुरु जी आ पहुंचे। नादौण की जंग में भाई साहिब की शूरवीरता तथा गुरु-श्रद्धा देखकर गुरु पातशाह ने आप जी को १६९१ ई को 'दीवान' की उपाधि दी। भाई मनी सिंघ जी ने गुरु के महिल-- माता साहिब कौर व माता सुंदरी जी को संकट के समय पूरा सहयोग प्रदान किया। गुरु-महिल के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के समय भाई मनी सिंघ जी उनके साथ जाया करते थे। माता सुंदरी जी ने भाई साहिब को तत्त खालसा एवं बंदई खालसा में समझौता करवाने के लिए भेजा और संगत को हुक्म किया कि सब भाई मनी सिंघ जी के वचनों पर फूल चढ़ाएं। '. . . वाहिगुरु जी की फ़तह' तथा 'फतहि दर्शन' की दो पर्चियां

श्री हरिमंदर साहिब के सरोवर में डाली गईं। 'फतहि दर्शन' वाली पर्ची डूब गई और '. . . वाहिगुरु जी की फ़तह' (तत्त खालसा) को फ़तह प्राप्त हुई। उपरोक्त सारी घटनाओं से पता चलता है कि भाई मनी सिंघ जी की गुरु-घर के साथ कितनी निकटता थी।

शहादत : भाई मनी सिंघ जी की शहीदी का वास्तविक कारण यह था कि श्री अमृतसर का दीपमाला का मेला (बंदी छोड़ दिवस) तुर्कों ने कई वर्षों से जबरन बंद कर दिया था। भाई मनी सिंघ जी ने सूबा लाहौर को पांच हज़ार रुपए टैक्स अदा करना स्वीकार करके मेला मनाने की स्वीकृति ले ली। 'शहीद बिलास' के कर्ता भाई सेवा सिंघ तथा 'प्राचीन पंथ प्रकाश' के कर्ता स. रतन सिंघ (भंगू) ने टैक्स की राशि दस हज़ार रुपए बताई है। इसकी पुष्टि भाई सेवा सिंघ द्वारा लिखित इन पंक्तियों से हो जाती है :

दस हज़ार देणा कीआ, थी सिंघन तब आइ।
दस दिवस मेला रहे, लया सिंघन लिखवाइ।
गैल सिंघां दे बात इम, लई खान ने ठान।
मेल ओपरा दुषट का, रख कर बीच कुरान।

मगर सूबे की नीयत बदल गई और उसने श्री अमृतसर के चारों ओर पहरा बैठा दिया। मुगलों के जुल्मों से भयभीत संगत मेले में न आ सकी तथा कोई चढ़ावा भी एकत्र न हुआ। टैक्स अदा न कर पाने के कारण भाई मनी सिंघ जी की जवाबदेही हुई। आप जी ने भाई भूपत सिंघ तथा गुलज़ार सिंघ को लाहौर भेजकर दोबारा दस दिनों के लिए वैसाखी के मेले की आज्ञा ले ली। मेले के निकट आते ही सरकार की नीयत फिर बदल गई। इस बात की ख़बर संगत को मिल जाने के कारण भारी इकट्ठ न हो सका।

निश्चित टैक्स की अदायगी न होने के कारण भाई मनी सिंघ जी को अन्य मुखी सिंघों सहित गिरफ्तार कर लिया गया और बहुत कष्ट एवं यातनाएं दी गईं। अंततः संवत् १७९१ (१७३४ ई), आषाढ़ सुदी पंचमी को भाई मनी सिंघ जी को नखास चौक (लंडा बाज़ार, लाहौर, जहां अब गुरुद्वारा शहीदगंज साहिब शोभायमान है) में बंद-बंद काटकर शहीद कर दिया गया। भाई मनी सिंघ जी का नाम सिक्ख धर्म में सदा प्रकाश-स्तंभ बनकर आने वाली पीढ़ियों का नेतृत्व करता रहेगा।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि भाई मनी सिंघ जी की बहुपक्षीय शख़्सियत की पंजाब के इतिहास में विलक्षण एवं निराली जगह है। स. रतन सिंघ (भंगू) द्वारा लिखित यह कबित्त भाई मनी सिंघ जी की शख़्सियत के हर पक्ष को प्रकट करता है :

सिक्खन मैं सिक्ख ऊचो, भगतन मैं भगत मूचो,
सिक्खी की निआई कहीए, भाई मनी सिंघ जी।
जगत मैं जै कार भयो, धरम अरथ देह दयो,
सिदक सों कटायों हीयो, न मानी कछू संक जी।
सिक्ख सो प्रसंन भए, दुषट-सभ भ्रिषट भए,
गिआन की खड़ग सों, सो मारे चौरंग जी।
गुर सिक्ख कहावै जोऊ, करनी यहि कमावै सोऊ,
मनी सिंघ तुल्ल भयो को, राजा औ न रंक जी ॥१॥

(पृष्ठ ३००)

❁

शहीद भाई तारू सिंघ जी : जीवन वृत्तांत

*-सिमरजीत सिंघ**

श्री अमृतसर-खेमकरन स्टेट हाईवे-२१ नंबर सड़क श्री अमृतसर से झबाल-भिक्खीविंड में से होती हुई भारत-पाकिस्तान सीमा पर स्थित खेमकरन जाती है। इस सड़क से दो किलोमीटर की दूरी पर एक ऐतिहासिक गांव पूहला है। रेलवे स्टेशन पट्टी यहां से २५ किलोमीटर की दूरी पर है। इस गांव का डाकघर सिंघपुरा है, जिसका पिन कोड १४३३०३ है। भारत-पाकिस्तान के बंटवारे से पूर्व यह गांव ज़िला लाहौर की तहसील कसूर में पड़ता था जो देश-विभाजन के बाद ज़िला श्री अमृतसर में आ गया। आजकल यह गांव ज़िला तरनतारन की तहसील पट्टी में पड़ता है। पाकिस्तान के अस्तित्व से पूर्व इस गांव के पास से गुज़रती यह सड़क कसूर तथा श्री अमृतसर को आपस में जोड़ती थी। लाहौर से भी एक सड़क आती थी, जो लाहौर से भिक्खीविंड में से होती हुई हरीके पत्तण पहुंचती थी। ये दोनों सड़कें भिक्खीविंड के पास एक-दूसरे से मिलकर चौरस्ता बनाती थीं। इस चौरस्ते से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर यह गांव पूहला स्थित है। इसके साथ ही सिंघपुरिया मिसल के मुखिया नवाब कपूर सिंघ का गांव सिंघपुरा स्थित है। पूहला गांव संधू भाईचारे के जट्टों का निवास-स्थान है। संधुओं का मुख्य ठिकाना श्री अमृतसर एवं लाहौर ज़िले थे, जहां से वे सतलुज की ऊपरी दिशा में अंबाला के पहाड़ों के नीचे की दिशा की ओर, पश्चिम में गुजरांवाला तथा पूरब में सियालकोट तक फैले हुए हैं। संधू अपना मूल सूरजवंशी राजा रघु से हुआ मानते हैं। रघु के बारे में कहा जाता है कि कादर ने विस्माद में आकर एक अति सुंदर कन्या की उत्पत्ति की। जब उसकी उम्र ब्याह योग्य हुई तो देवताओं एवं राजाओं ने उसको ब्याहने की कोशिश की। अंत में एक राजा सफल हो गया जो इतना बहादुर था जितना कि सूरज। उसको रघु कहा जाता था। इस घटना का ज़िक्र करते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी 'बचित्र नाटक' में वर्णन करते हैं कि :

साध करम जे पुरख कमावै ॥
नाम देवता जगत कहावै ॥
कुक्रित करम जे जग मैं करहीं ॥
नाम असुर तिस को सभ धरहीं ॥
तिन ते होत बहुत न्रिप आए ॥
दच्छ प्रजापति जिन उपजाए ॥
दस सहंस्र तिहि ग्रिह भई कंनिआ ॥
जिह समान कह लैग न अंनिआ ॥
काल क्रिआ ऐसी तह भई ॥
ते सभ बिआहि नरेसन दई ॥

रघु की औलाद रघुवंशी कहलाती है। इस रघु ने समूचे भारत एवं फ्रांस पर राज्य किया था। संधुओं का विचार है कि उनके पूर्वज़ महमूद गज़नवी से कैद होकर या किसी और

**संपादक, गुरमति ज्ञान/गुरमति प्रकाश*

कारण से माझा क्षेत्र में लाहौर के पास आबाद हो गए, माझा में सरहाली, वलटोहा, भड़ाणा, मनावा आदि मझैल संधुओं के प्रसिद्ध गांव हैं। सरहाली गांव के निवासी पूहले ने आकर अपने नाम पर एक गांव पूहला आबाद किया था। इस सम्बंध में प्रसिद्ध विद्वान लेखक प्रिं: सवरन सिंघ चूसलेवड़ ने अपनी पुस्तक 'शहीदी साका भाई तारू सिंघ जी' में भी ज़िक्र किया है। इस गांव के भाई जोध सिंघ जी के घर भाई तारू सिंघ जी का जन्म हुआ। भाई जोध सिंघ जी की पत्नी अपने पुत्र भाई तारू सिंघ तथा एक विधवा पुत्री बीबी तारो के साथ गांव में रहती थी।

बाबा बंदा सिंघ बहादर को १७१६ ई. में घोर यातनाएं देकर महिरोली (दिल्ली) में शहीद कर दिया गया। बाबा बंदा सिंघ की शहीदी के बाद लाहौर एवं दिल्ली के तख़्त द्वारा सिक्खों के सिरों के दाम लगाए गए तथा सिक्खों को देखते ही मार देने के ऐलाननामे बार-बार किए जा रहे थे।

१७२६ ई. में अब्दुसमद खां को लाहौर से बदलकर मुलतान भेज दिया गया तथा उसकी जगह पर उसके पुत्र जकरिया ख़ान को पंजाब का नया सूबेदार नियुक्त कर दिया गया। जकरिया ख़ान सिक्खों का कट्टर विरोधी था। पंजाब का सूबेदार बनते ही उसने सिक्खों का नामो-निशान मिटाने की ठान ली। इतिहासकार डॉ. हरी राम गुप्ता के अनुसार जकरिया ख़ान ने एलान कर दिया कि सिक्खों के केश काटकर लाने वाले को बिस्तर तथा कम्बल, सिक्खों के बारे में ख़बर देने वालों को दस रुपये, अगर कोई जिंदा पकड़कर या मारकर लायेगा तो उसको पचास रुपये इनाम दिया जायेगा। सिक्खों के घरों को लूटने की सरकार द्वारा पूरी तरह से छूट थी। सिक्खों को पनाह देने वाले के लिए मौत की सज़ा थी। सिक्खों को दबाने के लिए जगह-जगह पर पुलिस तैनात की गई थी। जकरिया ख़ान ने सिक्खों का नामो-निशान मिटाने के लिए अपने पूरे इलाके में अपने भरोसेयोग्य मुखबिर तैयार कर मुखबिरों का जाल बिछा दिया, जिनमें चौधरी राणा रंधावा घणीए वाला, छीने गांव वाला करमा, कान्हे गांव वाला राय खुशाली संधू, ऐमे वाला नत्था उप्पल, नैशहिरा पंनूआं गांव का माना, चशमे का राय हरचंद, नौशहिरा ढाला गांव का साहिब राय संधू, जोधा नगरिया का धरम दास, दिलबाग सराउ, खोखर वाला जोध, कसूर का भीमा ढिल्लों, धनेशटे वाला हैबत मल्ल, भागूवाल गांव का भागू काहलों, भिक्खी वाला लालू विरक, बुंदालीआ का मोलक राय संधू, ठट्ठे गांव का हयात खां, मजीठे का चौधरी मद्दो, गुजरांवाला का चौधरी दिआला वड़ाइच, सरां का हसना संधू, सैदेवाल वाला दिआला काहलों, घरजाख गांव का सयाम शाह खत्री, मट्टू गांव का गुरीआ, अकाल बग्घा, राय थानाबाद, चट्ठे गांव का पीर मुहम्मद, नौशहिरे गांव का मुकेमी गिल, इस्माइल खां मंडिआला सियालकोट का, सोधरे का दियानत राय, बटाले का कजला रंधावा, जंडिआले का हरिभगत निरंजनिया, फ़तह खां घेब कोट-घेब गांव का, औलिया घेब गांव का, कादर बख़्श निढाल, ऐमनाबाद का उघर सैन खत्री, भूरे गांव का निबाहू संधू, साहिब खां टिवाणा, माहलपुरिआ, गुलाब राय खत्री, काछे का मिलखा संधू आदि सरगर्म मुखबिर थे। इनमें से लाहौर दरबार में सिक्खों की ख़बर पहुंचाने वालों में सबसे आगे जंडिआले वाला हरिभगत निरंजनिया तथा छीने वाला करमा छीना थे। उनके बारे में 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में स. रतन सिंघ (भंगू) उल्लेख करते हैं :

जंडयाले वाले बहुत फड़ावैं,
हुते गुरू इक सिक्ख कहावैं।
हरभगत निरंजनीओं सो कहावै,
सो आगे हुइ सिंघन फड़ावै ॥२०॥ . . .
करमां छीनां छीनीं रहै,
बिदोसे सिंघन मारत वहै।

(पृष्ठ ३०८)

हरिभगत निरंजनिया जंडिआले वाले भाई हंदाल की वंश में से था। भाई हंदाल श्री गुरु अमरदास जी का अनन्य सिक्ख था, जिसको गुरु साहिब ने मंजी बख़्शकर इलाके का प्रचारक नियुक्त किया था। यह हर समय 'निरंजन' शब्द का जाप किया करता था, इसी कारण इस संप्रदाय का नाम 'निरंजनिये' पड़ गया। भाई हंदाल का पुत्र बिधी चंद तथा उसकी संतान सिक्खों के विरुद्ध कुकर्म करने लग पड़ी। हरिभगत निरंजनिये ने सिक्खों को पकड़कर तथा उनकी गुप्त सूचना देकर सरकार से बड़े ईनाम प्राप्त करने शुरू कर दिए।

१७३९ ई में नादिर शाह अफ़गानिस्तान से चलकर मार-काट तथा लूट-खसूट करता हुआ पंजाब में से गुजरकर सीधा दिल्ली पहुंच गया। किसी ने भी उसको रोकने की कोशिश नहीं की। अगर कोई उसके आगे थोड़ा-बहुत अड़ा तो वह मारा गया। नादिर शाह हिंदोस्तान का लूटा हुआ धन-माल तथा हज़ारों की गिनती में बंदी बनाई स्त्रियों को लेकर जब शिवालिक की पहाड़ियों के साथ-साथ लाहौर की तरफ वापिस जा रहा था तो सिंघ जंगलों में से निकलकर उस पर बाज़ की तरह झपट पड़े और बहुत सारा धन-माल तथा बंदी बनाई स्त्रियों को छुड़ाकर उसके घर पहुंचा आये। नादिर शाह यह सब कुछ चकित होकर देखता ही रह गया। उसने जकरिया ख़ान को पूछा कि यह कौन-सी मुसीबत है जो अचानक ही मुझ पर आ पड़ी। जकरिया ख़ान ने नादिर शाह को सिक्खों के बारे में विस्तार से बताया। जकरिया ख़ान की बातें सुनकर नादिर शाह ने उसको सचेत किया कि इनको अभी खत्म कर दो वरना वो दिन दूर नहीं जब ये तुमसे राज्य-भाग छीन लेंगे। नादिर शाह मन ही मन में ज़हर घोलता अफ़गानिस्तान वापिस चला गया।

नादिर शाह के जाने के बाद जकरिया ख़ान ने सिक्खों पर और सख़्ती कर दी। श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर के इर्द-गिर्द फौज का सख़्त पहरा लगा दिया गया ताकि कोई सिक्ख दर्शन-स्नान न कर सके। इसके बारे में स. केसर सिंघ छिब्बर 'बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का' में ज़िक्र करते हैं :

अंम्रितसर नित्त होवै लड़ाई,
माझे विचि फिरन फउजां।
घरि घरि देखन जाई,
हलकारे छिछरे ढक देखदे फिरन।
जो सिख हथि लगे, सो ज़िब्हा करन।

(पृष्ठ २२२)

इतने सख़्त पहरे के बावजूद भी सिक्ख अपनी जान तली पर रखकर, दुश्मन का पहरा तोड़कर अमृत सरोवर में स्नान कर जाते थे। माड़ी कंबो वाला भाई सुक्खा सिंघ कई बार बरसती गोलियों में दुश्मन को ललकार कर स्नान करके छू-मंत्र हो जाया करता था। यह वो समय था जब ज़ालिम हाकिमों को भ्रम हो गया था कि सारे सिक्ख ख़त्म कर दिए हैं। आम लोगों को अगर कहीं एक-दो सिक्ख दीख पड़ते तो वे समझते कि ये तो बहुरुपिये हैं, सिंघ तो ख़ान ने खत्म कर दिए हैं। इस तरह अपने अस्तित्व को दर्शाने के लिए दो शूरवीर सिंघों- भाई गरजा सिंघ तथा भाई बोता सिंघ ने

जरनैली सड़क पर नूर दी सरां के पास नाका लगाकर महिसूल उगराहा और व्यंग्यमयी ढंग से चिट्ठी भेजकर 'भाभी खानो' को अपनी ताकत का एहसास करवाया।

भाई तारू सिंघ जी ने भाई मनी सिंघ जी के जत्थे से अमृत छककर पूर्ण खालसा रूप धारण किया था। भाई तारू सिंघ वां तथा भाई मनी सिंघ जी की शहीदी ने आपके जीवन पर बहुत गहरा असर डाला था।

भाई तारू सिंघ जी खेतीबाड़ी करके अपने परिवार का गुज़ारा करते थे। भाई तारू सिंघ जी के खेत गांव से लगभग डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर पश्चिम दिशा में थे। खेतों के आगे पहाड़ वाली दिशा में घनी झिड़ी (वृक्षों का समूह) थी। किसी समय यह जामुन वाली झाड़ी तथा छांगे-मांगे वाले जंगल का ही हिस्सा थी। ये दोनों अब पाकिस्तान में चले गए हैं। उन दिनों माझे के सिंघ उन जंगल-बेलों में ही विचरण कर रहे थे। रात को कोई न कोई सिंघों का जत्था इस झिड़ी में आ टिकता तथा दो-तीन दिन रहकर आगे चला जाता था। भाई तारू सिंघ जी रात को लंगर तैयार करके बड़ी श्रद्धा-भावना से छकाते तथा उनकी जरूरत के अनुसार वस्त्र आदि का भी प्रबंध करते थे। स. रतन सिंघ (भंगू) 'श्री गुरु पंथ प्रकाश' में लिखते हैं कि :

तारू सिंघ तहिं खेती करै,
साथ पिंड वहि हाला भरै।
देह हाकम कछु थोड़ा खावै,
बचै सिंघन के पास पुचावै।
है उस के इस भैण अर माई,
पीस कूट वै करैं कमाई।
आप खांइ वहि रुखी मिस्सी,
मोटा पहिर आप रहि लिस्सी।
जोऊ बचे सो सिंघन देवै,
उइ बिन सिंघन और न सेवैं। (पृष्ठ ३४६)

पूहला गांव लाहौर की ओर जाने वाली मुख्य सड़क पर होने के कारण आने-जाने वाले यात्रियों को रात हो जाने पर इसी गांव में गुज़ारनी पड़ती थी। भाई तारू सिंघ जी बचपन से ही साध वृत्ति तथा सेवा भावना वाले थे। वे यात्रियों की बिना किसी भेदभाव के लंगर-पानी की सेवा करते तथा रात्रि गुजारने के लिए चारपाई-बिस्तर का प्रबंध करके यात्रियों की सेवा का पुण्य कर्म कर रहे थे। लाहौर से आने-जाने वाले सिंघों से उनको लाहौर में घटित घटनायों का पता चलता रहता था। उन दिनों ज्यादातर घटनायें सिंघों से सम्बंधित हुआ करती थीं। समय पर उनको पता चल जाने पर कई बार उनका बचाव हो जाया करता था। सिंघ, जो जंगलों में दिन काट रहे थे, उनके पास ख़बर पहुंचने की इस पड़ाव के अलावा और भी कई साधन थे।

एक बार पट्टी के बड़ी उम्र के फौजदार जाफर बेग ने रहीम बख़्श माछी को धमकाया कि वो अपनी नौजवान सुंदर पुत्री सलमा का निकाह उसके साथ कर दे। जब गरीब बाप ने इसके बारे में अपनी समझदार पुत्री की इच्छा पूछी तो उसने साफ इन्कार कर दिया। फौजदार ने पहले कई प्रकार के लालच दिए, फिर धमकियों पर उतर आया, परंतु जब उस पर कोई असर न हुआ तो अपने आदमी भेजकर उसको उठवा लिया। जब लड़की को उसके सामने पेश किया गया तो उसने फिर साफ़ इन्कार कर दिया। फौजदार ने उसको हवेली के एक कमरे में बंद करके ऊपर सख़्त पहरा लगा दिया। रहीम बख़्श ने लाहौर जाकर शाही दरबार में ख़ान बहादुर के पास फरियाद

की कि उसकी पुत्री को फौजदार से रिहा करवाया जाये। जाफर बेग, ख़ान बहादुर का रिश्तेदार था और साथ ही उसका मित्र भी, जो पट्टी के पास सिक्खों का नामो-निशान मिटाने में प्रसिद्धि पा रहा था। ख़ान बहादुर ने रहीम बख़्श की फरियाद को ओर कोई ध्यान न दिया। कोई चारा न चलता देखकर रहीम बख़्श वापिस गांव की ओर चल दिया और रास्ते में पूहला गांव के पास उसको रात हो गई। वो रात काटने के लिए भाई तारू सिंघ जी के घर रुक गया। उसने रात को सारी आप-बीती भाई तारू सिंघ जी को बताई। भाई तारू सिंघ जी ने रहीम बख़्श को हौसला दिया तथा अकाल पुरख पर भरोसा रखने के लिए कहा। उन दिनों झिड़ी में लगभग १० सिंघों का जत्था ठहरा हुआ था, जिनके लिए लंगर-पानी भाई साहिब के घर से ही जाता था। भाई तारू सिंघ जी ने रहीम बख़्श की दुख भरी कहानी उन जुझारू सिंघों को बताई। सिंघों ने वार्ता सुनकर उसी समय अरदासा सोधकर पट्टी शहर की ओर प्रस्थान किया तथा सलमा को दिन चढ़ने से पहले ही पूहला गांव ले आए। रहीम बख़्श दो दिन भाई तारू सिंघ जी के पास रहकर, अपनी पुत्री को साथ लेकर अपने रिश्तेदारों के पास कसूर की ओर चला गया।

श्री अमृतसर के कोतवाल काज़ी अब्दुल रहमान की मृत्यु के बाद जकरिया ख़ान ने अपने खासम-खास गांव मंडियाली के रहने वाले मस्सा ख़ान रंघड़ को श्री अमृतसर का कोतवाल नियुक्त कर दिया। गांव मंडियाली, श्री अमृतसर से ८ किलोमीटर दूर दक्षिण की ओर स्थित है, इसलिए विशेष काम यह था कि किसी भी सिक्ख को श्री अमृतसर में दाख़िल न होने दिया जाए। इसने श्री दरबार साहिब में ही अमले-फैले समेत पक्का डेरा जमा लिया। श्री दरबार साहिब की पवित्रता का ख़्याल किए बिना यह अपना सिंहासन जमाकर नाम-बाणी के कीर्तन की जगह नित्य वेश्या का नाच करवाने लगा तथा शराब-तंबाकू का सरेआम प्रयोग करने लगा। मस्से रंघड़ की इन कार्यवाहियों से सिक्खों के हृदय कुरेदे गए। जब श्री दरबार साहिब के हो रहे अपमान का पता स. शिआम सिंघ के जत्थे को लगा, जो उस समय राजस्थान के मरुस्थल में पनाह लिए बैठा था, तो उसने स. महिताब सिंघ मीरांकोटिए तथा स. सुक्खा सिंघ माड़ी कंबो वाले को दुष्टों को सोधने के लिए भेजा। इन दोनों शूरवीर योद्धाओं ने किसानों का रूप धारण करके मालिया देने के बहाने श्री दरबार साहिब के अंदर प्रवेश कर मस्से रंघड़ का सर काट दिया। इस तरह १७४० ई. में मस्से रंघड़ का कत्ल करके सिंघों ने उसको उसके किए की सज़ा दी।

मस्से रंघड़ के कत्ल के बाद ख़ान बहादुर का अपने गुस्से पर काबू न रहा। हकूमत द्वारा सिंघों पर घोर सख़्ती शुरू कर दी। मुखबिरों को लाहौर बुलाकर अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए ताड़ना की जिससे मुखबिरों ने हाकिमों की नज़रों में अपनी शाख बनाने के लिए, सिंघों को पकड़ाने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दिया। हकूमत द्वारा १७२६ ई. वाले हुक्म फिर से लागू कर दिए गए। सिंघों को पनाह देने वाले के लिए मौत की सज़ा मुकर्र कर दी गई। सूबा लाहौर की सख़्ती के कारण सिक्ख घर-घाट छोड़कर शिवालिक की पहाड़ियों, राजस्थान के मरुस्थलों तथा लक्खी जंगल आदि की सुरक्षित जगह पर चले गए। इस सम्बंध में डॉ. हरी राम गुप्ता का ज़िक्र है कि जो सिक्ख ऐसा न कर सके वे सरकारी अफसरों के जुल्म या ईनाम

हासिल करने वाले पड़ोसियों का शिकार हो गए।

चैंचल संधू चीचे वाले, हैबत मल्ल नेशटे वाले पूहला गांव के पास वाले इलाके की सूचना रख रहे थे। इनको सूचना मिल गई कि भाई महिताब सिंघ मीरांकोटिया कहां छिपा है तथा वह भाई तारू सिंघ जी का पुराना मित्र है। जब हरिभगत निरंजनिये को इस बात का पता चला तो चाहे पूहला गांव की चौधराइत उसके अधिकार में नहीं थी, फिर भी उसने जकरिया ख़ान के पास जाकर मुखबरी की कि पूहला गांव का भाई तारू सिंघ जंगलों में छिपे सिक्खों की मदद करता है तथा वह महिताब सिंघ मीरांकोटिये का मित्र है। ज्ञानी गिआन सिंघ ने इसका ज़िक्र 'पंथ प्रकाश' में बड़े विस्तार से किया है :

पूले वारो तारू सिंघ भगत सदावै जोऊ,
सिंघन के पास सोऊ खरच पुचाइ है।
आप दूख भूख सैहैं, सिंघन को सूख दैहै,
भूजे चणे चाबै आप रोटी उनैं दाइ है।
जान कै भगत तांका मांनहै बचन लोग,
भोग शाही चोरन को होरन ते दयाइ है।
और मीरां कोटीआ मताब सिंघ तांको यार,
राखत पयारवे सुनैरीए सदाइ है।
सिंघ तांके साथ बहु धाड़ा चोरी है करात,
आत धन जोऊ तारू सिंघ को दै जाइ है ॥१०॥

(पृष्ठ ७४६)

जकरिया ख़ान ने हरिभगत निरंजनिये की बात सुनकर मोमन ख़ान की कमांड तले २० सिपाहियों को भाई तारू सिंघ जी को की गिरफ्तार करने के लिए पूहला गांव भेज दिया तथा हरिभगत निरंजनिये की जिम्मेदारी भाई महिताब सिंघ को गिरफ्तार करने की लगा दी।

मोमन ख़ान ने गांव पूहला पहुंचकर भाई तारू सिंघ जी को ढूंढना शुरू कर दिया और भाई तारू सिंघ जी तथा उसकी बहन बीबी तारो को गिरफ्तार करके, हथकड़ियां तथा बेड़ियां बांधकर वो लाहौर की ओर चल पड़ा। भाई तारू सिंघ जी को गिरफ्तार करके ले जा रही फौज को गांव भड़ाणा में रात पड़ गई। भड़ाणा गांव लाहौर से ३२-३३ किलोमीटर दूर पूरव-दक्षिण दिशा में स्थित है। भाई आली सिंघ एवं भाई गुरबखश सिंघ इसी गांव के निवासी थे, जिनकी फसलें नौशहिरे वाले चौधरी की घोड़ियों ने उजाड़ दी थीं, जिसका विरोध करने पर बात बढ़कर जंग तक पहुंच गई थी तथा भाई तारा सिंघ वां से लाहौर की फौज की लड़ाई हुई। ये दोनों सिंघ वां की जंग में शहीदी प्राप्त कर गए थे। इसी गांव भड़ाणा (पढाणा) में शाही सेना द्वारा रात ठहरने की योजना बनाई गई। गांव के लोग इकट्ठा होना शुरू हो गए। जब उनको पता चला कि भाई तारू सिंघ जी तथा उनकी बहन बीबी तारो को लाहौर की फौज गिरफ्तार करके ले जा रही है तो वे गुस्से से भर गए। उन्होंने बिना किसी परिणाम की परवाह किए शाही सेना पर हमला करके भाई साहिब तथा उनकी बहन को छुड़ाने की योजना बनाई। स. रतन सिंघ (भंगू) ने 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में इसका ज़िक्र इस तरह किया है :

हुती भड़ाणे गुर सिखी तिन लख आयो रोहु।
तारू सिंघ छुडाईए होणी होइ सु होइ।

(पृष्ठ ३४८)

जब भाई तारू सिंघ जी के पास गांव वाले अपनी यह योजना बताने गए तो भाई साहिब ने उनको इस तरह करने से रोक दिया तथा कहा कि इस तरह करने से लोग कहेंगे कि गुरु का सिक्ख मौत से डरता हुआ सारे गांव को मुसीबत में डालकर स्वयं दौड़ गया है।

भाई तारू सिंघ जी का विचार सुनकर गांव वालों ने शाही सेना से लड़ने का इरादा

त्याग दिया। उन्होंने शाही सेना को मोटी रकम देकर भाई तारू सिंघ जी की बहन को छुड़ा लिया। इसके बारे में 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में ज़िक्र है कि :

अहिदीअन को कछु दे कै दाम,
दरशन करयो तारू सिंघ।
भैण साथ थी सो फड़ी आई,
सो दंम दे लोकन छडवाई। (पृष्ठ ३४८)

दूसरे दिन सिपाही भाई तारू सिंघ जी को लेकर लाहौर की ओर चल दिए। नखास चौंक, लाहौर में नाज़िम लाहौर जकरिया ख़ान की कचहरी थी, जिसके इर्द-गिर्द सुरक्षा के लिए एक गहरी खाई बनी हुई थी। डॉ. हरी राम गुप्ता के अनुसार बाबा बंदा सिंघ बहादर की शहीदी के बाद बहुत-से सिक्खों को ढूंढकर मारा गया, बहुत-से गोली का निशाना बनाए गए, बहुत सारे जंज़ीरें डालकर लाहौर लाए गए, जिनको इसी नखास चौंक में शहीद किया जाता था। स. रतन सिंघ (भंगू) इसके बारे में 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में लिखते हैं कि :

कई चरख कई फांसी मारे।
कई तोपन कई छुरी कटारे।
कईअन कै सिर मुंगलीं कुट्टे।
कई डोबे कई घसीट सु सुट्टे।
दब्बे टंगे बंदूखन दए मार।
कौन गनै जे मारे हज़ार।
पांत पांत कई पकड़ बहाए।
साथ तेग़न के ससि उडवाए।
किसे हत्थ किसे टंग कटवाइ।
अक्ख कढ किसै खल कढवाइ।
केशन वालो जौ नर होइ।
बाल बिरध लभ छडै न कोई।
(पृष्ठ २२८)

मोमन ख़ान ने भाई तारू सिंघ जी को हथकड़ियां एवं बेड़ियां डालकर जकरिया ख़ान के आगे पेश किया। लाहौर में भाई तारू सिंघ जी कई दिन जेल में रखकर कई दिनों तक यातनाएं दी जाती रहीं ।

भाई तारू सिंघ जी पर बागियों को शरण देने तथा उनके लिए आवश्यक वस्तुओं का प्रबंध करके देने के दोष लगाए गए। जकरिया ख़ान ने भाई तारू सिंघ जी के आगे दो शर्तें रखीं-- इसलाम कबूल करें या मृत्यु। भाई तारू सिंघ जी ने जकरिया ख़ान को पूछा कि "क्या इसलाम धारण करने से मौत नहीं आएगी? अगर मेरे धर्म बदलने से भी मौत मुझे ने कभी न कभीआ दबोचना ही है तो मैं अपने धर्म में पक्का रहकर ही क्यों न मरूं।" भाई तारू सिंघ जी का जवाब सुनकर गुस्से में आकर जकरिया ख़ान द्वारा भाई तारू सिंघ जी को चरखड़ी पर चढ़ाने का फतवा दिया गया तथा कहा गया कि उतनी देर चरखड़ी पर घुमाया जाये जितनी देर तक यह सिक्ख धर्म त्यागकर इसलाम कबूल नहीं कर लेता। हाकिम भाई तारू सिंघ जी को हर हाल में दीन-ए-मुहम्मदी में लाना चाहते थे ताकि सिक्खों की दृढ़ता को कमज़ोर किया जा सके और इसका प्रचार करके अन्य सिक्खों पर धर्म परिवर्तित करने के लिए ज़ोर डाला जा सके। डॉ. हरी राम गुप्ता लिखते हैं कि जकरिया ख़ान ने अपनी बात मनवाने के लिए भाई तारू सिंघ जी को चरखड़ी पर चढ़ाने का हुक्म दिया ताकि उसकी छाती एवं पसलियों की हड्डियों को तोड़ दिया जाए।

जैसे-जैसे भाई तारू सिंघ जी पर सख़्ती बढ़ाई गई, भाई साहिब और भी चढ़दी कला में होते गए। स. रतन सिंघ (भंगू) के अनुसार :

जिम जिम सिंघ को तुरक सतावैं,
तिम तिम मुख सिंघ लाली आवै।

जिम जिम सिंघ कछु पीए ना खाइ,
तिम तिम सिंघ संतोख है आइ ॥५॥
जीवण ते सिंघ आस चुकाई,
नहिं उह चिंत सु मरने काई।
सत संतोख धीर मन तांकै,
गुर का भाणा सिर पर जांकै ॥६॥

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ ३६७)

भाई साहिब ने सिक्खी में अटल विश्वास रखते हुए अकाल पुरख के आगे सिक्खी केशों-श्वासों संग निभ जाने की अरदास की। जब इस बात का पता जकरिया ख़ान को लगा तो उसने अहंकार में आकर सिक्खी की निशानी गुरु की मोहर 'केशों' को कत्ल करने का सुझाव काज़ी को दिया। दरबार में काज़ी द्वारा फतवा जारी करने के बाद भाई तारू सिंघ जी के केश कत्ल करने के लिए नाइयों को बुलाया गया। भाई साहिब के चेहरे पर जलाल देखकर किसी की भी भाई साहिब के केशों को हाथ डालने की हिम्मत न हुई। स. रतन सिंघ (भंगू) इस घटना का विस्तार करते हुए 'श्री गुर पंथ प्रकाश' के लिखते हैं :

तब नवाब ने नऊए लगाए,
उन के संद खुंढे हो आए।
जिम जिम नऊए फेर लगावैं,
तिम तिम उन हथ भैड़े पावैं ॥१४॥
जिम जिम नऊअन नवाब डरावै,
तिम तिम नऊअन हथ कंपावैं।
कला खालसे तब ऐसी कई,
नऊअन द्रिषट मंद तब भई ॥१५॥
नवाब कहयो इन जादू चलाया,
कै नऊअन कछु लब्ब दिवाया।
अब लयावो मोची दो चार,
खोपरी साथ दिहु बाल उतार ॥१६॥

(पृष्ठ ३७१)

जकरिया ख़ान ने हुक्म किया कि इनके केश इस तरह उतारे जायें कि दोबारा उग न सकें। अत: मोचियों को बुलाकर भाई तारू सिंघ जी की केशों सहित खोपड़ी उतार देने का हुक्म किया गया :

तब नवाब बहु क्रोधहि भरा,
सोऊ हुकम उन मोचीअन करा ॥८॥
इस की खोपरी साथे बाल,
काट उतारो रंबी नाल।

(प्राचीन पंथ प्रकाश, पृष्ठ ३७१)

वहशिआना ढंग से ज़ालिमों ने भाई तारू सिंघ जी की खोपड़ी खुरपे से उतारकर सिर से अलग कर दी। देखने वाले चकित रह गए थे कि एक गुरु का सिक्ख बिना उफ़ तक किए कैसे अत्यंत यातनायें झेल रहा है :

सिंघ जी मुख ते सी न करी,
धंन धंन गुरमुख कहणी सरी।
हकारो देख लोक बहु भरे,
जो सोअ सुनैं सु है है करे ॥२॥
लोक सिआणे ऐसे कहैं,
पतिशाही इन की ना रहैं।

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ ३७१)

नखास चौंक में जहां साका घटित हुआ वह स्थान आजकल लाहौर रेलवे स्टेशन के बिलकुल सामने है। इस स्थान पर ही 'शहीदगंज सिंघणीआं' बना हुआ है। इस स्थान को 'लंडा बाज़ार' भी कहा जाता है। भाई साहिब की खोपड़ी उतारने के बाद उनको पास लगती खाई में फेंक दिया गया। ज्ञानी गिआन सिंघ ने खाफ़ी ख़ान का हवाला देकर लिखा है कि भाई तारू सिंघ जी की खोपड़ी उतार देने के बाद जकरिया ख़ान ने उनको खाई में फिंकवा दिया ताकि उनका मास गीध, कुत्ते आदि जानवर खा जायें। भाई तारू सिंघ जी जख़्मी हालत में भी

गुरबाणी पढ़ते गए। तीसरे दिन जब नवाब वहां से गुजरा तो वो भाई साहिब के मुख से आ रही गुरबाणी की आवाज़ सुनकर बोला, "अरे सिक्खा! तू अभी भी जिंदा है, मरा नहीं?" भाई तारू सिंघ जी ने जवाब दिया, "जकरिया ख़ान मैं तुझे और तेरे पुत्र को आगे लगाकर ही मरूंगा।"

भाई तारू सिंघ जी की खोपड़ी उतारे जाने के कुछ दिन बाद ही जकरिया ख़ान का पेशाब बंद होने के कारण वो मर गया तथा उसका पुत्र शिकार खेलने गया घोड़े से गिरकर मर गया।

भाई तारू सिंघ जी की खोपड़ी उतारी जाने के बाद भी वे २२ दिनों तक जिंदा रहे तथा गुरु की बाणी का पठन करते रहे। ज्ञानी गिआन सिंघ ज़िक्र करते हैं कि इन दिनों लाहौर का एक बढ़ई हर रोज आकर हलदी आदि का लेप बनाकर भाई साहिब के सिर पर बांधता रहा। आखिर, भाई तारू सिंघ जी २५ वर्ष की आयु में १ जुलाई, १७४५ ई को शहीदी पा गए। स. रतन सिंघ (भंगू) ने इस घटना का ज़िक्र करते हुए लिखा है कि :

ठारां सै ऊपर दुइ साल,
साका कीयो तारू सिंघ नाल ॥२२॥

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ ३७१)

भाई साहिब के शरीर का अंतिम संस्कार लाहौर के दिल्ली दरवाज़े के बाहर किया गया। अंतिम संस्कार करने से पूर्व उनका अंतिम स्नान श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर से पवित्र जल मंगवाकर किया गया। उनकी चिता को अग्नि भाई सुबेग सिंघ जंबर ने दी। जपु जी साहिब तथा अनंदु साहिब का पाठ पढ़कर अरदास की गई और कड़ाह प्रसाद की देग बांटी गई। इस सम्बंध में स. रतन सिंघ (भंगू) लिखते हैं कि :

हुतो अंम्रितसर जल जु मंगायो,
आप सिंघ अशनान करायो।
कड़ाह प्रशादि कर यौ तब ही,
शबद पढ़ायो जपु जी सभ ही ॥४॥
अनंद पढ़ाइ करा अरदास,
सिंघ सबहूं ठांढे तिस पास।

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ ३८२)

गत दिनों प्रसिद्ध सिक्ख विद्वान, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला के उप-कुलपति डॉ जसपाल सिंघ के साथ मेरा मिलाप हुआ तो उन्होंने मुझे बताया कि प्रसिद्ध बंगाली विद्वान श्री रवींद्रनाथ टैगोर ने भाई तारू सिंघ जी के बारे में बहुत ही श्रद्धापूर्वक ढंग से कविता रूपी श्रद्धांजलि भेंट की है। कविता का शीर्षक 'प्रारथना ओती दान' है जिसके अर्थ 'मांगने वाले की इच्छा से ज्यादा दिया गया दान' किए जाते हैं। कविता में श्री रवींद्रनाथ टैगोर बयान करते हैं :

"शहीदगंज की धरती लहू-लुहान हो गई थी। पठानों ने बहुत सारे सिक्खों को कैद कर लिया था तथा उनको शहीद कर दिया था। अब नवाब तारू सिंघ को ओर मुड़ा और कहने लगा, 'मुझे तुझ पर तरस आ रहा है, मैं तेरी जान बख़्श देना चाहता हूं।' 'परंतु मेरा इतना अपमान क्यों?' तारू सिंघ ने कहा। नवाब कहने लगा, 'तू बहुत बहादुर है। मैं अपना गुस्सा तुझ पर नहीं निकालना चाहता, बस, मैं इतना चाहता हूं कि तू अपने केश मुझे दे दे।"

भाई तारू सिंघ ने जवाब दिया, "मैं तेरी नर्म-दिली याद रखूंगा। मैं तुझे उससे ज्यादा देना चाहता हूं जो तूने मुझसे मांगा है। (मेरे केशों को हाथ न लगाना) मेरा साबत-सूरत सिर ले ले।"

गुरमति संगीत में राग द्वारा रस-निष्पत्ति

*-डॉ. प्रेम मच्छाल**

कीर्तन और राग का बहुत गहरा सम्बंध है। दोनों को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। रागबद्ध बाणी-गायन मन को अति प्रभावित करती है। इससे श्रोता मंत्रमुग्ध हो आनंद की अनुभूति प्राप्त करता है तथा साथ ही आनंद की प्राप्ति भी होती है। कीर्तनकारों और श्रोताओं को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित बाणी का गायन करके आध्यात्मिक सफलता की प्राप्ति के लिए कहा गया है। श्री गुरु नानक देव जी ने तो कीर्तन में संगीत का इतना महत्व स्वीकार किया है कि कीर्तन को लोक-जीवन की वास्तविक सम्पत्ति घोषित किया है।

कीर्तन करने का अभिप्राय केवल बाणी-गायन से ही नहीं, अपितु बाणी-गायन के साथ-साथ उस पर विचार करना भी अति आवश्यक है। सच्चा कीर्तनिया वो है जो बाणी-गायन के साथ-साथ बाणी के अर्थ को समझता हो तथा बाणी का गायन इस प्रकार करे कि शब्दों का उच्चारण भी स्पष्ट हो जाए।

श्री गुरु नानक देव जी का आदर्श था कि राग और लय निहित होना अनिवार्य है, क्योंकि इस प्रकार के कीर्तन में उच्च कोटि की तन्मयता की स्थिति प्राप्त होती है। सिक्ख गुरु साहिबान ने कीर्तन में रागों का प्रयोग जरूरी कर संगीत को एक नई दिशा प्रदान की और रागदारी कीर्तन की प्रथा को भी संचालित किया। सिक्ख गुरु साहिबान द्वारा राग में कीर्तन करने का समर्थन एवं उसका अंगीकरण एक क्रांतिकारी परिवर्तन के रूप में सामने आया। अधिकतर सिक्ख गुरु हिंदोस्तानी संगीत जगत से परिचित थे तथा संगीत के महत्व को जानते थे। संसार के समूह मतों में से सिक्ख मत एक ऐसा धर्म है जो विशेषकर न केवल 'शबद' को 'गुरु' मानता है और पूजता है, बल्कि शबद-समूह श्री गुरु ग्रंथ साहिब का उपासक भी है, जिसकी पवित्र बाणी ३१ रागों में अंकित है। श्री गुरु नानक देव जी जपु जी साहिब में लिखते हैं कि अगर कोई कपड़ा गंदा हो जाए तो उसे हम साबुन से साफ कर लेते हैं, परंतु अगर हमारी बुद्धि पापों द्वारा मलिन हो जाए तो वो केवल 'नाम' द्वारा ही धोई जा सकती है। कलयुग में नाम-सिमरन का एक साधन कीर्तन भी है।

श्री गुरु नानक देव जी ने कलयुगी जीवों को संसार रूपी समुद्र से पार उतरने के लिए कीर्तन की विधि को प्रमुखता दी और भारतीय रागों को अपनाकर १९ रागों में बाणी उचारी। कीर्तन-व्यवस्था को सांगीतिक पुष्ट देने हेतु भाई मरदाना जी को अपना साथी बनाया, जो रबाब बजाने में निपुण थे। रबाब के स्वरों पर गुरु जी तथा भाई मरदाना जी कीर्तन करते और श्रोताओं को आत्मविभोर कर देते। इसके बाद परंपरागत रूप में कीर्तन का प्रवाह दस गुरु

**अस्सिटेंट प्रोफेसर, संगीत एवं नृत्य विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र-१३६११९, मो. ९७२९५-६०००१*

साहिबान तक चलता रहा जो वर्तमान में भी प्रचलित है।

कीर्तन करने के कुछ खास नियम भी होते हैं, जो इस प्रकार हैं :

१. सबसे पहले वाद्य पर राग का शुद्ध अलाप करना।
२. राग निर्धारित मंगलाचरण या दंडवत वंदना करना।
३. जो शबद गाना है उसका पहले मीठे स्वर में संगत को शुद्ध पाठ सुनाना, ताकि सबको पता चल जाए कि यह शबद गाया जाना है।
४. सहायक वाद्यों व तबले के स्वर की ऊंचाई इतनी होनी चाहिए कि वाद्यों की आवाज़ के आगे गायन की आवाज़ सुनने में असुविधा न हो।
५. कीर्तन के लिए संयमपूर्ण आसन का प्रावधान है। अंग-संचालन वर्जित है तथा मग्न हो कीर्तन करने का आदेश है।
६. जिस शबद का कीर्तन हो रहा है उसके भाव की पुष्टि प्रमाणों सहित की जाए, जिसमें मनघड़त पदावलियां और कहानियां उद्घोष न की जाएं। प्रमाणों के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी, दशम ग्रंथ की बाणी, भाई गुरदास जी के कबित्त सवैये, रहितनामे, भाई नंद लाल जी की गज़लें, गुर बिलास और सूरज प्रकाश की पदावलियां पढ़ी जा सकती हैं।
७. 'रहाउ' की पंक्ति को स्थाई बनाया जाए और अपनी तरफ से कोई भी पंक्ति गुरबाणी-कीर्तन में न जोड़ी जाए।
८. कीर्तन शबद-प्रधान शैली है, इसलिए शबदों का उच्चारण स्पष्ट तथा शुद्ध होना चाहिए।

आधुनिक समय में भी इन नियमों में से कुछ का पालन किया जाता है, परंतु मन चंचल होने के कारण कीर्तन में गंभीरता और शांति का भाव प्राय: कम होने लगता है।

कीर्तन की महत्ता बताते हुए गुरु जी ने झंझु और मुकंद (जो कीर्तनकार थे) को उपदेश देते हुए कहा कि कीर्तन के समान कोई तप नहीं। बाणी का पाठ कुएं के पानी के समान है, जिससे अपनी (जीवन रूपी) खेती को पकाया जाता है और कभी-कभी यह साथ वाले खेतों (जीवन) में भी पहुंच जाता है।

बाणी का कीर्तन मेघ के जल के समान है जो रिमझिम-रिमझिम बरसता है और सभी खेतों (जीवन) को प्रफुल्लित करता है। जो संगत कीर्तन श्रवण कर उसे अपने मन में बसा लेती है वो ***"नानक नदरी नदरि निहाल"*** हो जाती है। कथा-कीर्तन के महत्व को इस प्रकार भी दर्शाया गया है कि जैसे माता पुत्रों के कारण शोभा पाती है, वैसे ही कथा माता है, कीर्तन पुत्र है और प्रेम कथा का भ्राता है।

सहायक सामग्री :

१) कीर्तन अंक, सिंघ सभा पत्रिका, फरवरी, १९७८
२) मासिक पत्रिका, सिक्ख फुलवाड़ी, जून, १९८६
३) गुरु ग्रंथ साहिब, सांस्कृतिक सर्वेक्षण

श्री रवींद्रनाथ टैगोर और पंजाबी भाषा

*-डॉ. जसबीर सिंघ**

बंगाल के महान रहस्यवादी कवि श्री रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म कोलकाता में श्री दविंद्रनाथ टैगोर के घर ७ मई, १८६१ ई को हुआ। इनके दादा श्री द्वारिकानाथ शहज़ादा करके जाने जाते थे और अमीर परिवार से सम्बंधित थे। यह परिवार कोलकाता के प्रमुख परिवारों में जाना जाता था। श्री टैगोर जी छोटी उम्र में ही कविताएं लिखने लग गए थे। घर के माहौल के अनुसार उन्होंने संगीत-शिक्षा भी ग्रहण कर ली थी। प्रारंभिक शिक्षा सेंट जेवियर स्कूल से प्राप्त की। मातृ-भाषा 'बंगाली' घर में ही प्राप्त की। श्री रवींद्रनाथ टैगोर की पहली कविता १८७४ ई में 'तत्व बोदनी' पत्रिका में प्रकाशित हुई। १८८५ ई में परिवार की पत्रिका के संपादक बने और इसी वर्ष गीतों का पहला संग्रह प्रकाशित किया। मानसी, मायर खेला, संगीत-नाट, राजा और रानी काव्य तथा नाटकों ने इनकी शख़्सियत को निखारा। ये सब १८८७-९० के समय में प्रकाशित हुए थे। इनके प्रसिद्ध काव्य-संग्रह गीतांजलि को सरकार ने 'नोबेल पुरस्कार' दिया और १९१५ ई में 'लाइट' का पद दिया, जो इन्होंने जलियां वाला बाग के साके के समय वापिस कर दिया। १९०१ ई में बोलपुर के निकट शांति निकेतन स्कूल की स्थापना की। १९२१ ई. में एक अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय 'विश्वभारतीय' की नींव रखी। साहित्यक संस्थानों ने भी मान-सम्मान दिए; कई देशों की यात्रा की, जिनमें इंग्लैंड, चीन, जापान, स्विटजरलैंड, मिस्र, कनाडा, फ्रांस, दक्षिण अमेरिका, इटली, दक्षिणी-पूर्वी एशियाई देश, नार्वे, स्वीडन, डेनमॉर्क, जर्मनी आदि विशेष रूप से वर्णनयोग्य हैं। आप १९३२ ई में कोलकाता विश्वविद्यालय में बंगाली के प्रोफेसर नियुक्त हुए। ७ अगस्त, १९४० ई. में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने डॉक्टरेट की डिग्री सर मोरस ने शांति निकेतन में आकर विशेष कानवोकेशन में दी। ७ अगस्त, १९४१ ई में गुर्दों की बीमारी के कारण उनका देहांत हो गया।

श्री रवींद्रनाथ टैगोर हर समय पंजाबी बुद्धिजीवियों को अपनी मातृ-भाषा के साथ प्यार करने के लिए प्रेरित करते रहे। उन्होंने डॉ. इलामा इकबाल, बलराज साहनी आदि को कई बार पंजाबी की महानता और मातृ-भाषा का एहसास करवाने के लिए प्रेरित किया। बलराज साहनी को एक बार कड़वे शब्दों में ताड़ना की-- "हिंदी तुम्हारी मातृ-भाषा नहीं है। तुम पंजाबी हो, तुम पंजाबी भाषा में क्यों नहीं लिखते? मैं बंगाली में लिखता हूं जो कि प्रादेशिक भाषा है, फिर भी केवल हिंदोस्तान ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लोग मेरा लिखा पड़ते हैं। प्रश्न यहां महानता या छोटेपन का नहीं, एक लेखक का अपनी जन्म-भूमि, अपने लोगों और अपनी भाषा के साथ रिश्ता होता है। यह सिर्फ उन सबकी वजह से है जो अपनेपन का एहसास कर सकते हैं। मैं तुम्हारे साथ सहमत नहीं हूं कि तुम इस भाषा को घटिया और पछड़ी भाषा बोल सकते हो, जिस भाषा में श्री गुरु नानक देव जी जैसे महान कवियों ने गुरमति साहित्य की रचना की हो। पंजाबी और बंगाली साहित्य बहुत पुराना

** Swarn Colony, Gole-Gujral, Jammu Tawi-180002; Mo. 9906566604*

है। मैं श्री गुरु नानक देव जी के कुछ हिस्सों का बंगाली में अनुवाद करने की कोशिश कर रहा हूं परंतु मुझे यकीन है कि मैं उनके साथ न्याय नहीं कर सकूंगा। इस प्रकार यदि तुम अपना पूरा जीवन किसी अन्य भाषा में लिखने में लगा लेते हो तो न उस भाषा के लोग तुम्हें अपना समझेंगे और न ही दूसरी भाषा के। बेगानों के दिल जीतने से पहले तुम्हें अपने लोगों का दिल जीतना होगा।"

श्री रवींद्रनाथ टैगोर सदा से ही सिक्ख धर्म के इतिहास और फ़िलासफ़ी में रुचित थे। १८८५ ई में टैगोर ने एक कविता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बारे में लिखी; दूसरी कविता 'प्रथानो अतीत दान' कविता शहीद भाई तारू सिंघ जी के बारे में लिखी। उन्होंने एक अन्य कविता 'बौंदीबीर' लिखी जो बाबा बंदा सिंघ बहादर के जीवन पर आधारित थी। प्रसिद्ध पंजाबी चित्रकार स. सोभा सिंघ (१९०१-१९८६) और लोकगीत कर्ता देविंदर सत्यार्थी श्री रवींद्रनाथ टैगोर से प्रभावित थे और उन्होंने टैगोर के "आइडियाज़ एण्ड इवन हिज़ लुक्स" ग्रहण किए। ❁

श्री हरिक्रिशन धिआईऐ . . . *(पृष्ठ १५ का शेष)*

उसके फ़र्ज समझाए।

गुरु जी का फरमान था कि नेक कमाई में बरकत होती है। काम के साथ-साथ परमात्मा की बंदगी भी करते रहें। छल-कपट की कमाई सुख नहीं देती। जो बच्चियों को जन्म के पहले मार देते हैं उनके साथ कोई रिश्ता-नाता न रखें। तंबाकू का सेवन किसी रूप में न करें। गुरु-घर की गोलक में एकत्र धन का जरूरतमंदों के लिए उपयोग करें। वाहिगुरु का हुक्म सिर झुका कर स्वीकार करना चाहिए। समय की नज़ाकत को देख उन्होंने संगत को हुकमनामे भेजे कि मसंदों से सावधान रहें, क्योंकि कई मसंद गुरु की गोलक का दुरुपयोग कर रहे थे। उनका कहना था कि सभी ध्यान रखें कि सिक्ख धर्म की मर्यादा का हनन न हो।

एक दिन शाम के समय गुरु जी ने संगत को दर्शन देते हुए कहा, "बाबा बकाले!" अर्थात् नौवें 'गुरु' बकाला ग्राम में निवास करते हैं। इसके बाद श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब अकाल पुरख के चरणों में गमन कर गये। ❁

कविता

मेहनत करते जो दिल खोल

मेहनत करते जो दिल खोल,
कमल तू उनकी जय-जय बोल!
बरखा में जो बदन भिगाते,
सरदी-गरमी से लड़ जाते,
कष्ट उठा कर अन्न उगाते,
नहीं क्या वो जीवन अनमोल?
कलम तू उनकी जय-जय बोल!
सूखा, गीला, पाला मारे,
फिर भी क्या वे हिम्मत हारे?
लड़ें आपदा से मिल सारे,
करनी कर जो पीटे न ढोल,
कलम तू उनकी जय-जय बोल!
पशु रख व्यवसाय चलाता,
दूध-दही का वो निर्माता,
पालक जग का जो कहलाता,
उसके जीवन में रस घोल,
कलम तू उनकी जय-जय बोल!

❁

-श्री 'भुजंग' राधेश्याम सेन, शिव मंदिर के पीछे, मंगली पेट, सिवनी- ४८०६६१ (म. प्र.)

बुज़ुर्ग हमारे आदर्श हैं

*-स. सुरजीत सिंघ**

भारतीय संस्कृति, जो युगों-युगों से मानव समाज और सम्पूर्ण विश्व के लिए आदर्श अनुकरण व श्रद्धा की प्रतीक रही है, उसी गौरवशाली प्रेरणामूर्त भारतीय संस्कृति के सिद्धांतों की उपेक्षा करने में आज का भौतिकवादी युवा वर्ग लगा हुआ है और वह भौतिक सुख, ऐश्वर्य, धन, वैभव एवं विलासिता में निरंतर डूबता जा रहा है। इसी कारण समाज में चारों ओर अनेकानेक विकृतियां और समस्याएं उत्पन्न होती जा रही हैं। वर्तमान में सर्वत्र परिवर्तन नज़र आ रहा है और आधुनिक बनने के चक्कर में पुरातन संस्कृति को ऐसे छोड़ा जा रहा है मानो वह अवांछनीय और अछूत हो गई हो। आज समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली की अधिकतर समाप्ति एवं एकल परिवार की पनपती संस्कृति के कारण युवा वर्ग अपने आप स्वतंत्र एवं एकल जीवन जीने को लालायित है। वह परिवार में बड़े बुज़ुर्ग की दख़लंदाजी को फालतू समझ कर उनके साथ अमानवीय व्यवहार करता है जिससे बुज़ुर्ग-जनों को तिरस्कारपूर्ण जीवन जीने पर मज़बूर होना पड़ता है। आज के युवा वर्ग ने तो जमीन पर बैठना ही छोड़ दिया है। वह तो हर पल जमीन से ऊपर ही उड़ना चाहता है। वह कभी नहीं सोचता कि आज जिस ऊंचाई पर वह पहुंचा है वहां उसको पहुंचाने में किसका अहम योगदान है; पालन-पोषण करने में इन बुज़ुर्गों ने कितनी परेशानियों का सामना किया है।

सेवा जैसा मूल मानवीय गुण युवा वर्ग में लुप्त होता जा रहा है। बुज़ुर्गों को घर से बेघर कर, वृद्धाश्रम पहुंचा कर युवा वर्ग अपने कर्त्तव्यों की इतिश्री मान लेता है। आज की युवा पीढ़ी भौतिकता की अंधी दौड़ में इन जिम्मेदारियों को भूलती जा रही है। युवा वर्ग मानवीय मूल्यों को तिलांजलि देकर निजी स्वार्थ, लोभ व घृणा के वशीभूत होकर ऐसे घृणित कार्य कर बैठता है जो उन्हें इंसान से हैवान बना देते हैं। हमें हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि बुज़ुर्ग हमारे आदर्श हैं, हमारी मानव संस्कृति के वाहक हैं। बुज़ुर्गों के पास अनेकानेक अनुभव हैं। उनके पास वह स्नेहमयी प्यार वाला आंचल है जिसके साये में रह कर युवा वर्ग निरंतर प्रगति कर सकता है। हमें बुज़ुर्गों के अमूल्य अनुभवों से बहुत कुछ सीखना चाहिए। आज आवश्यकता बुज़ुर्गों का सम्मान करने की है ताकि आने वाली पीढ़ियां भी बुज़ुर्गों का पूरा-पूरा सम्मान कर सकें और यह नितांत आवश्यक भी है, ताकि समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली भी बनी रह सके।

**५७-बी, न्यू कालोनी, गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान)-३२४००७, मो ९४१३६-५१९१७*

खून दान महा दान

-डॉ मनमोहन सिंघ*

फसलों व वनस्पति के लिए पानी जरूरी है। ज़िंदगी के लिए पानी के साथ-साथ खून जरूरी है। खून है, तो ज़िंदगी है। ज़िंदगी को सुचारू रूप से चलाने के लिए शरीर के अंदर खून का उचित संचार बहुत जरूरी है। अगर खून का दबाव कम होगा तो शरीर बीमार पड़ जायेगा। अगर खून किसी नाड़ी के अंदर जम जाये या खड़ा हो जाये तो इसका नतीजा भी बीमारी ही होगा। किसी दुर्घटनावश अगर किसी शरीर से बहुत ज्यादा खून बह जाये तो उसे तुरंत बाहर से खून देने की जरूरत पड़ती है। अस्पताल में अगर खून समय पर उपलब्ध न हो या खून प्राप्त करने में देर हो जाये तो मरीज की मृत्यु भी हो सकती है, इसलिए अस्पताल में खून जमा रखना जरूरी होता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए 'ब्लड बैंक' होते हैं, जिनमें खून एकत्र करके रखा जाता है तथा जरूरत के समय किसी मरीज को खून देकर उसकी जीवन-ज्योति जगती रखी जा सकती है।

खून दान को महा दान कहा जाता है। वास्तव में खून दान जीवन दान है। इसी प्रकार दान में दिया गया थोड़ा-सा खून भी किसी मरीज की निराश ज़िंदगी को आशावान बना सकता है।

संसार में अनेक नस्ल, रंग, धर्म, संस्कृति व जाति के लोग बसते हैं। इन अलग-अलग नस्लों, रंगों धर्मों आदि को मानने वालों में अब तक हज़ारों लड़ाइयां हो चुकी हैं, लाखों जानें जा चुकी हैं, अरबों रुपयों की सम्पत्ति बर्बाद हो चुकी है। संसार में जर्मन कौम का राज्य स्थापित करने के लिए हिटलर ने द्वितीय विश्व-युद्ध शुरू किया। लेबनान में मुसलमानों व ईसाइयों में कई वर्षों से जातीय लड़ाई चल रही है। संयुक्त राज्य अमेरिका व कनाडा में कलू कलकस कलां नाम का फाशी संगठन काले व रंगदार प्रवासियों के खून का प्यासा है।

कुछ समय पूर्व इंग्लैंड में नेशनल फ्रंट व स्किन हैंडज नाम के गोरे बेकार युवकों ने एशियाई लोगों के विरुद्ध जातीय झगड़े किये। भारत में भी अनेकों जातीय झगड़े होते रहते हैं। इन जातीय झगड़ों के कारण विश्व भर में अब तक लाखों जानें जा चुकी हैं, सैकड़ों मण खून बेकार ही बह चुका है। जरा सोचें, इस खून का रंग कैसा था? लाल! बिलकुल लाल!! केवल लाल!!! किसी की चमड़ी बेशक काली हो या गोरी, हर चमड़ी के नीचे खून का रंग लाल ही होता है। मनुष्य बेशक भारतीय हो या अफ्रीकी या अमेरिकन, हर मनुष्य के खून का रंग लाल ही होता है। यहां तक कि पक्षियों के खून का रंग भी लाल होता है। पृथ्वी में भी लाल रंग की मिट्टी अधिक उपजाऊ मानी जाती है। जातीय भेदभाव तथा अन्य सांप्रदायिक विभाजन के कारण उत्पन्न झगड़ों पर लगाम लगा दी जाए तो इस झगड़ों में बह रहा खून बिना खून के ज़िंदगी की लड़ाई लड़ रहे व्यक्तियों के काम आ सकता है। खून का कोई धर्म नहीं होता। खून कोई जात-पात, छुआ-छूत, धर्म, भाषा, प्रांत या देश नहीं पहचानता। उचित मात्रा में किये गये खून दान से स्वास्थ्य पर कोई विपरीत असर नहीं पड़ता। खून दान के लिए कॉलेज व यूनीवर्सिटी बहुत अच्छे केंद्र हैं। इसके अलावा समाज में कई गैर-सरकारी संगठन भी खून दान कैंप आयोजित कर इस क्षेत्र में बहुमूल्य सेवा कर रहे हैं। ☸

*८८९, फेज़-१०, मोहाली-१६००६२

गुरबाणी चिंतनधारा : ६०

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

जिह प्रसादि आरोग कंचन देही ॥
लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥
जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥
मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत ॥
जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥
मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ॥
जिह प्रदासि तुझु को न पहूचै ॥
मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे ॥
जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह ॥
नानक ता की भगति करेह ॥३॥(पन्ना २७०)

छठी असटपदी की तीसरी पउड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी उस पारब्रह्म परमेश्वर की बख़्शिशों का ज़िक्र करते हुए कृतघ्न जीव को समझाते हैं कि जिस परमेश्वर की रहमत से तुझे कंचन जैसी सुंदर आरोग्य देह की प्राप्ति हुई है अर्थात् जिसकी दया-दृष्टि से तुझे सोने के समान शरीर मिला है, ऐसे प्यारे प्रभु से तो तू लिव जोड़कर रख अर्थात् उसकी भक्ति कर। हे मन! जिसकी रहमत की बदौलत तेरा पर्दा बना हुआ है अर्थात् तेरी इज्जत बरकरार है ऐसे पारब्रह्म का गुणगान करके ही यह हृदय सुख-पूर्वक रह सकता है। जिसकी कृपा की बदौलत तेरे सारे ऐब (गुनाह) ढके हुए हैं, हे मन! तू ऐसे दयालु स्वामी की शरण में पड़ा रह। जिसकी कृपा-दृष्टि से तेरी कोई बराबरी नहीं कर सकता, ऐसे परमेश्वर का श्वास-श्वास सिमरन कर। जिसकी मेहरबानी से तूने दुर्लभ मानव शरीर पाया है उस प्रभु की हमेशा बंदगी कर। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी कलयुगी जीवों को श्वास-श्वास परमेश्वर की बंदगी करने का पावन उपदेश देते हैं।

इस संसार में चिंतकों ने 'पहला सुख निरोगी काया' को ही माना है, क्योंकि स्वस्थ शरीर से ही समस्त कार्य सिद्ध हो सकते हैं। निरोगी काया से ही मन में आनंद की अनुभूति संभव है।

उस परमेश्वर को सदा स्मरण करना चाहिए जिसने कंचन जैसा निरोग शरीर बख़्शा है। असल में जीव के अंत:करण में क्या चल रहा है, इसे जब तक जीव अपनी करनी से या यूं कहें, अपने कर्मों द्वारा जगजाहिर नहीं कर देता तब तक उसे कोई नहीं जान सकता, केवल उस अंरतयामी प्रभु के सिवाय। परमेश्वर की जीव पर यह एक बहुत बड़ी मेहरबानी है जिसकी बदौलत उसकी जग में इज्जत बनी रहती है, क्योंकि उसके अंदर के अवगुणों को कोई और तब तक नहीं जान पाता, जब तक जीव बाहरी क्रिया-कलाप द्वारा उसे स्पष्ट नहीं कर देता। यही नहीं, चौरासी लाख योनियों में मनुष्य को ही सरदारी मिली है, जिसकी कोई अन्य बराबरी नहीं कर सकता। जीव को हर पल उस पारब्रह्म परमेश्वर का सिमरन तथा

***२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

शुक्राना करना चाहिए। गुरु पातशाह ने इस पउड़ी में दयालु प्रभु के अनंत उपकारों को हृदय में याद रखते हुए उसकी बंदगी करने को प्रेरित किया है। चिंतकों के चिंतनानुसार परमेश्वर से बड़ा परमेश्वर का नाम है जिसकी बदौलत उसे पाया जा सकता है, यथा :

प्रभु से बड़ा प्रभु का नाम।
अंत में निकला यही परिणाम।

यह लोक-प्रचलित धारणा भी हमें प्रभु-भक्ति, नाम-सिमरन हेतु ही प्रेरित करती है। गुरबाणी में तो सर्वत्र नाम की महिमा का फरमान हुआ है।

जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥
मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥
जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥
मन तिसु प्रभु कउ कबहू न बिसारी ॥
जिह प्रसादि बाग मिलख धना ॥
राखु परोइ प्रभु अपुने मना ॥
जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥
ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥
तिसहि धिआइ जो एक अलखै ॥
ईहा ऊहा नानक तेरी रखै ॥४॥

(पन्ना २७०)

उपरोक्त पउड़ी में भी गुरु पातशाह ने उस परवरदिगार की रहमतों के प्रति जीव को कृतज्ञ रहते हुए सदैव उसका सिमरन करते रहने का निर्मल उपदेश दिया है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जिस परमेश्वर की कृपा से आभूषण पहनते हैं, हे मन! ऐसे प्रभु के सिमरन में तू क्यों आलस्य करता है? अर्थात् जिसकी कृपा से तेरे सौन्दर्य को बढ़ाने हेतु तुझे कीमती जेवर आदि प्राप्त हुए हैं, उस प्रभु का शुक्राना करते हुए उसका सिमरन करने में आलस्य नहीं करना चाहिए। जिसकी रहमत से तुझे घोड़ों तथा हाथियों की सवारी करने का सुअवसर मिला है, हे मन! ऐसे कृपालु प्रभु को तू कभी भी अपने हृदय से विस्मृत मत करना। जिसकी कृपा से तुझे बाग-बगीचे, जमीन तथा धन-दौलत नसीब हुई है उस परमेश्वर को सदा हृदय-घर में बसाकर रख अर्थात् हर पल उसका सिमरन कर। हे मन! जिस मालिक ने तेरी सुंदर सृजना की है उस प्रभु को उठते-बैठते हर समय याद कर। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन उपदेश देते हैं कि हे जीव! उस परमेश्वर की बंदगी कर जो एक है तथा बेअंत है। ईहां-ऊहां (लोक-परलोक में) वही तेरा मान रखने वाला है।

जीव को सब कुछ बख़्शने वाले प्रभु को सदैव हृदय-घर में पिरो कर रखना चाहिए। शरीर की रचना करने वाले, उसके पालन-पोषण तथा उसके श्रृंगार के समस्त साधन उपलब्ध करवाने वाले परमेश्वर (जो लोक-परलोक में जीव की लाज रखता है) को कभी भुलाना नहीं चाहिए, श्वास-श्वास उसकी बंदगी करनी चाहिए। यही जीव का सर्वोत्तम कर्त्तव्य है। इस कर्त्तव्य से विमुख हुआ जीव गुरबाणी के आशयानुसार अपना कीमती जीवन बर्बाद कर लेता है, यथा :

रैणि गवाई सोइ कै दिवसु गवाइआ खाइ ॥
हीरे जैसा जनमु है कउडी बदले जाइ ॥

(पन्ना १५६)

करने योग्य कार्यों को करने और न करने योग्य कार्यों को त्यागने की अपील शेख फरीद जी ने पावन बाणी में की है, यथा :

फरीदा जिन्ही कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि ॥
मतु सरमिंदा थीवही सांई दै दरबारि ॥

(पन्ना १३८१)

सेवा और सिमरन से इस जीवन को

शृंगारना चाहिए तभी लोक-परलोक में सच्ची तथा स्थिर इज्जत मिलती है।

जिह प्रसादि करहि पुंन बहु दान ॥
मन आठ पहर करि तिस का धिआन ॥
जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥
तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी ॥
जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु ॥
सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु ॥
जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥
सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति ॥
जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥
गुर प्रसादि नानक जसु कहै ॥५॥

प्रस्तुत पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने जीव को समस्त प्राप्तियों हेतु अकाल पुरख का शुक्राना करने के लिए प्रेरित करते हुए पावन उपदेश दिया है कि हे मन! जिस मालिक की रहमत का सदका तू दान-पुण्य करने योग्य हुआ है, आठों पहर उसकी उपमा कर। जिस प्रभु की कृपा से तू रीति-रस्में निभाने योग्य हुआ, उस प्रभु का श्वास-श्वास सिमरन कर। जिसकी रहमत की बदौलत तेरा सुंदर स्वरूप है अर्थात् जिसकी कृपा से तेरी मनमोहक छवि है, उस प्यारे प्रभु को सदैव याद रख। जिस दयालु प्रभु की दया-दृष्टि से तुझे श्रेष्ठ जाति (रुतबा) मिली है (जिससे समाज में तेरा मान-सम्मान है) उस परमेश्वर को दिन-रात याद कर। जिसकी रहमत से संसार में तेरी इज्जत बरकरार है, उस प्रभु की सिफत-सलाह, गुरु की बख़्शिशें लेकर करता रह।

गुरु पंचम पातशाह ने इस असटपदी की प्रत्येक पउड़ी में जीव को उस परम पिता परमेश्वर के प्रति कृतज्ञ बने रहने, उसका शुक्राना करने की विचार-शृंखला को जारी रखते हुए समझाया है कि सब कुछ देने वाले दयालु परमेश्वर का ध्यान सदैव हृदय में धारण करके आठ पहर उसी का गुणगान करना चाहिए। वस्तुतः प्रभु ही तन-मन-धन सर्वस्व का दाता है। अगर उसने यह बेशकीमती मनुष्य जीवन ही न बख़्शा होता तो जीव प्रभु की बंदगी नहीं कर सकता था, क्योंकि बाकी समस्त योनियां भोग-भूमि हैं, केवल मनुष्य के पास ही कर्म-भूमि है। उसमें जीव जैसा चाहे वैसा बीज बो सकता है कुदरत के अटल नियम के अनुसार जो जैसा बोता है उसे वैसा काटना पड़ता है। इस सत्य एवं तथ्य को जो सदैव स्मरण रखता है गुरु-कृपा से वो पाप-कर्मों से बच जाता है, अन्यथा इसके विपरीत दृष्टिकोण रखने वाले की अधम स्थिति हो जाती है। परमेश्वर से प्राप्त समस्त बख़्शिशों के बदले जीव को परमेश्वर का शुक्राना करना चाहिए।

जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥
जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥
जिह प्रसादि बोलहि अंम्रित रसना ॥
जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥
जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥
जिस प्रसादि संपूरन फलहि ॥
जिह प्रसादि परम गति पावहि ॥
जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि ॥
ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥
गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥६॥

प्रस्तुत पउड़ी में बताया गया है कि जीव के मन में प्रभु के प्रति चेतनता बनी रहे, इस उद्देश्य की पूर्ति प्रभु-सिमरन तथा गुरु-रहमत से ही मुमकिन है। इसी लक्ष्य को समझाते हुए गुरु पंचम पातशाह फरमान करते हैं कि (हे जीव!) जिस पारब्रह्म परमेश्वर की कृपा से तेरे कान नाद (आवाज़) सुनने में समर्थ होते हैं अर्थात् जिसकी कृपा से तुझे सुनने

की क्षमता प्राप्त हुई है; जिसकी रहमत से तू प्रकृति के आश्चर्यजनक नज़ारे देखता है, जिसकी बरकतों से तेरी रसना मीठे वचन बोलने की ताकत पाती है, जिसकी कृपा से तू सहजता से आनंदपूर्वक दुनिया में निवास करता है, जिसकी रहमत से तेरे शरीर के अंग काम कर रहे हैं अर्थात् गतिशील हैं, जिसकी रहमत से तू प्रत्येक कार्य-व्यवहार में कामयाब होता है, जिसकी बख़्शिश से तुझे परम गति की प्राप्ति होती है, जिसकी कृपा से तू सहजता से सुख में समाहित हो जाता है अर्थात् बेफिक्र होकर मस्ती के आलम में सुख-पूर्वक जीवन व्यतीत करता है, ऐसे रहमतों के मालिक प्रभु को भुलाकर या त्यागकर तू दूसरी ओर प्रीति क्यों लगाता है? गुरु पंचम पातशाह पावन उपदेश देकर जीव को सुचेत करते हैं कि हे जीव! गुरु की कृपा से गफ़लत की नींद से जागृत हो अर्थात् अज्ञानता के अहंकार से निकल कर ज्ञान के प्रकाश की ओर आ और सतर्क रहना सीख ले।

वस्तुत: जिस प्रभु की रहमतों का अंत नहीं उसी को भुलाकर जीव झूठी मोह-माया में फंस कर उस सुखों के निधान प्रभु को विसार देता है। गुरुदेव जीव को गफ़लत की नींद से जगाकर गुरु-कृपा का पात्र बनने को प्रेरित कर रहे हैं कि जिस परमेश्वर की दया-दृष्टि से तुझे सब कुछ प्राप्त हुआ है उसी दातार पिता को भुलाकर आखिर तूने पछताना ही है। तब पछताने, से क्या लाभ होगा जब प्राण पंखेरू उड़ जायेंगे, श्वासों की पूंजी खत्म हो जायेगी।

गुरबाणी आशयानुसार मानव जीवन, जिसे चौरासी लाख योनियों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है, पाकर भी जिसने ईश्वर की बंदगी न की वह आत्मघाती है। गुरबाणी का फरमान है :

दुलभ देह पाई वडभागी ॥
नामु न जपहि ते आतम घाती ॥१॥
मरि न जाही जिना बिसरत राम ॥
नाम बिहून जीवन कउन काम ॥१॥

(पन्ना १८८)

जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि ॥
तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥
जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥
रे मन मूड़ तू ता कउ जापु ॥
जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥
तिसहि जानु मन सदा हजूरे ॥
जिह प्रसादि तूं पावहि साचु ॥
रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ॥
जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥
नानक जापु जपै जपु सोइ ॥७॥

इस पउड़ी में भी अकाल पुरख की रहमतों का ज़िक्र करते हुए, जीव के मूर्ख मन को जागृत करते हुए गुरु पंचम पातशाह पावन उपदेश दे रहे हैं कि जिस परमेश्वर की कृपा से तू जगत में प्रसिद्ध है अर्थात् संसार में तेरी शोभा है, ऐसे दयालु प्रभु को तू हृदय से कदाचित भी विस्मृत मत कर। जिसकी रहमत सदका तुझे जग में यश मिला है, हे मूढ़ मन! तू उस प्रभु का श्वास-श्वास जाप कर। जिसकी रहमतों से तेरे समस्त कार्य सिद्ध होते हैं अर्थात् परवान चढ़ते हैं, उसे हृदय में बसाकर रख। वह परमेश्वर तेरे सदा अंग-संग है, यह विश्वास हृदय में सदा कायम रख। जिसकी कृपा से तुझे सत्य की प्राप्ति हुई है, हे मेरे मन! तू उसी में लीन हो जा। गुरु पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जिसकी कृपा से सभी भवसागर से पार उतर जाते हैं, मैं निरंतर उसी ईश्वर का जाप करता हूं अर्थात् जिसकी कृपा से सबका कल्याण होता है, उस परमेश्वर का प्रत्येक जीव को निरंतर सिमरन करते रहना चाहिए।

वस्तुत: लोक-परलोक के समस्त सुख प्रभु की बंदगी में ही समाहित हैं। जीव को हर हाल में उस प्रभु का सिमरन करते रहना चाहिए। प्रभु के सिमरन से ही आवागमन के बंधनों से छुटकारा संभव है।

आपि जपाए जपै सो नाउ ॥
आपि गवाए सु हरि गुन गाउ ॥
प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥
प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥
प्रभ सुप्रंसन बसै मनि सोइ ॥
प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥
सरब निधान प्रभ तेरी मइआ ॥
आपहु कछू न किनहू लइआ ॥
जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ॥
नानक इन कै कछू न हाथ ॥८॥६॥

छठी असटपदी की अंतिम पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जी ने अन्य उपरोक्त पउड़ियों से भिन्न चिंतन प्रस्तुत किया है। श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि प्रभु-नाम-सिमरन वही करता है जिससे वह आप करवाता है। वही मनुष्य प्रभु के गुणों का गुणगान करता है जिसे गुण गाने की प्रेरणा प्रभु द्वारा मिलती है। प्रभु-रहमत से मन में ज्ञान का प्रकाश होता है, उसी की रहमत से हृदय रूपी कमल विकसित होता है अर्थात् खिलता है, प्रभु स्वयं दया करके किसी के हृदय में आ निवास करता है और जिस हृदय घर में आनंद का दाता निवास करता है वहां आठों पहर आनंद के निर्झर प्रवाहित होते हैं। जिस जीव पर पारब्रह्म परमेश्वर प्रसन्न होता है उसकी बुद्धि निर्मल हो जाती है अर्थात् उसे विवेक की प्राप्ति हो जाती है। हे वाहिगुरु जी! तेरी रहम-दृष्टि में ही समस्त सुखों के ख़ज़ाने समाहित हैं। अपनी कोशिशों से किसी ने कुछ हासिल नहीं किया। प्रो. साहिब सिंघ के चिंतनानुसार जीव की मेहनत तभी सफल होती है जब परमेश्वर की कृपा-दृष्टि होती है। गुरु पंचम पातशाह इस असटपदी की अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि वह पारब्रह्म अकाल पुरख जीव को जिस ओर लगाता है अर्थात् कर्म के जिस रूप में प्रवृत्त करता है जीव उधर ही लग जाते हैं। सर्वत्र उस मालिक का हुक्म कार्य कर रहा है, उसकी अवज्ञा कोई नहीं कर सकता।

इस असटपदी की अंतिम पउड़ी में गुरु पातशाह ने उस परमेश्वर की ताकत एवं उसके आदेश को सर्वोपरि मानते हुए जीव को अहंकार विहीन होकर कार्य करने का पावन उपदेश दिया है, क्योंकि इंसानी फ़ितरत है कि वह अपनी प्रत्येक प्राप्ति का अहंकार कर बैठता है।

सब कुछ की बख़्शिश करने वाला वह दातार पिता है, इसलिए गुरबाणी आशयानुसार इस तरह का भाव हृदय में गुरु-कृपा से दृढ़ रहे :

मति होदी होइ इआणा ॥
ताण होदे होइ निताणा ॥
अणहोदे आपु वंडाए ॥
को ऐसा भगतु सदाए ॥

(पन्ना १३८४)

अर्थात् कोई ऐसा व्यक्ति ही सच्चा भक्त कहा जा सकता है जो अक्लमंद होते हुए भी प्रभु के सामने स्वयं को आज्ञानी समझे; जो ताकतवर होते हुए भी ताकत का अहंकार न करे और जिसके पास थोड़ा-सा भी हो तो भी उसे बांट कर खाए।

गुर सिखी बारीक है . . . १५

–डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ*

प्रेम एक महान अवस्था है। इस अवस्था को पाने के लिए या तो परमात्मा की कृपा से अंतर में स्वत: प्रेरणा उत्पन्न हो जाये या फिर मन, बुद्धि को टिकाने का कोई ठोस आधार प्राप्त हो। सामान्य मानव-स्वभाव है कि वह अपने से श्रेष्ठ की ओर ही आकर्षित और प्रभावित होता है। यह अपने-अपने विवेक पर निर्भर है। जिसके ज्ञान-चक्षु जितने खुले हैं उतना ही वह परमात्मा की महानता देख पा रहा है और उतना ही उसके मन में प्रभु की ओर उन्मुख होने का आधार दृढ़ हो रहा है। परमात्मा की महानता जैसे-जैसे दिखती जायेगी मन उसके उतना ही निकट होता चला जायेगा। मनुष्य अपने से श्रेष्ठ हरेक से प्रेम नहीं करता भले ही उसके निकट भी हो, किंतु परमात्मा से निकटता स्वयं ही उसके प्रति मन में प्रेम की रोशनी भरपूर कर देती है। परमात्मा के निकट जाने से ही पता चलता है कि उसकी महानता को तो जाना ही नहीं जा सकता, बस, आवाक रह जाना पड़ता है। उसकी महानता की कथा तो अकथ्य है :

लख अचरज अचरज होइ अचरज हैराणा।
विसमु होइ विसमाद लख लख चोज विडाणा।
लख अदभुत परमदभुत भाणा।
अबिगति गति अगाध बोध अपरंपरु बाणा।
अकथ कथा अजपा जपणु नेति नेति वखाणा।
आदि पुरख आदेसु है कुदरति कुरबाणा ॥

(भाई गुरदास जी, वार १३:२४)

भाई गुरदास जी ने उपरोक्त पउड़ी में स्पष्ट किया है कि दुनिया में जितने भी प्रकार के आश्चर्य और विस्मय सोचे जा सकते हैं उनसे भी कई कोटि अधिक आश्चर्य स्वरूप वाला परमात्मा है, जिसका विस्तार बुद्धि से परे है। उसकी महिमा को शब्दों में बांधा नहीं जा सकता उसकी बस, वंदना की जा सकती है और उस पर बस, कुर्बान ही जाया जा सकता है। एक गुरसिक्ख इसलिए गुरसिक्ख है क्योंकि उसने मन में परमात्मा का भाव धारण कर लिया है और यह जान लिया है कि अकेला परमात्मा ही सारे गुणों से भरपूर, समस्त शक्तियों का स्वामी और कृपा करने वाला है, जिसकी दया उसे माया के जाल से बचाकर आवागमन के फेर से मुक्त कर सकती है। गुरसिक्ख बड़े-बड़े दार्शनिक सिद्धांतों, तर्कों, चर्चाओं में नहीं पड़ता और इन्हें व्यर्थ जानता है, क्योंकि ये सब स्वयं शंकाओं से भरे हुए हैं। वह सीधे परमात्मा से अपनी डोर जोड़ता है।

बादु बिबादु काहू सिउ न कीजै ॥
रसना राम रसाइनु पीजै ॥
अब जीअ जानि ऐसी बनि आई ॥
मिलउ गुपाल नीसानु बजाई ॥

(पन्ना ११६४)

*E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो. : ९४१५९६०५३३

एक गुरसिक्ख व्यर्थ के वाद-विवाद में इसलिए नहीं पड़ता क्योंकि उसके मन ने परमात्मा की सर्वोच्चता को दृढ़ कर लिया है और इसमें उसे कोई शंका नज़र नहीं आ रही। गुरसिक्ख का परमात्मा के निकट जाना, परमात्मा की शरण में जाना है; एक निर्बल का एक सबल के समक्ष समर्पण :

पउ सरणाई जिनि हरि जाते ॥
मनु तनु सीतलु चरण हरि राते ॥
भै भंजन प्रभ मनि न बसाही ॥
डरपत डरपत जनम बहुतु जाही ॥१॥रहाउ॥
जा कै रिदै बसिओ हरि नाम ॥
सगल मनोरथ ता के पूरन काम ॥
जनमु जरा मिरतु जिसु वासि ॥
सो समरथु सिमरि सासि गिरासि ॥३॥

(पन्ना १९७)

परमात्मा सारे भय दूर करने वाला, जीवन को सहज और प्रेममय बनाने वाला है। मनुष्य का पूरा जीवन उसके अधीन है। ऐसे समर्थ परमात्मा की शरण में जाकर वह उसमें लीन होता है, जिससे उसे जीवन-लक्ष्य प्राप्त होता है। गुरसिक्ख एक परमात्मा की ही शरण लेता है तथा अन्य किसी से कोई आशा इसलिए नहीं रखता, क्योंकि परमात्मा ही उसके सारे कार्य सम्पूर्ण करने में समर्थ है। वह परमात्मा के अतिरिक्त किसी अन्य के भय में नहीं रहता, क्योंकि उसके मन में बसा परमात्मा सारे भय नाश करने वाला है, जिससे वह भय रहित हो जाता है।

परमात्मा की शरण में जाना, उसे मन में धारण करके, उससे प्रेम करना नितांत सहज अवस्था है, क्योंकि परमात्मा सर्वश्रेष्ठ और सर्वशक्ति सम्पन्न होते हुए भी एक सहज शक्ति है :

सतिगुरु सहजै दा खेतु है जिस नो लाए भाउ ॥
नाउ बीजे नाउ उगवै नामे रहै समाइ ॥
हउमै एहो बीजु है सहसा गइआ विलाइ ॥
ना किछु बीजे न उगवै जो बखसे सो खाइ ॥
अंभै सेती अंभु रलिआ बहुड़ि न निकसिआ जाइ ॥

(पन्ना ९४७)

जब गुरसिक्ख परमात्मा की शरण में जाता है तो उसका अहंकार स्वयं ही समाप्त हो जाता है और वह अपनी बुद्धि-चतुराई का आसरा छोड़ देता है। वह परमात्मा में इस तरह लीन हो जाता है जैसे पानी में पानी। पानी में पानी का मिलना एक ऐसी अनोखी अवस्था है जो एक गुरमुख ही पा सकता है और उसकी इस अवस्था को दूसरा कोई समझ भी नहीं सकता। इस सहज अवस्था को वही समझ पाता है जिस पर परमात्मा कृपा करता है।

गुरमुख यह समझता है कि विकारों में फंस कर जीवन व्यर्थ होगा, आनंद तो परमात्मा के संग ही है।

सुभ बचन बोलि गुन अमोल ॥
किंकरी बिकार ॥
देखु री बीचार ॥
गुर सबदु धिआइ महलु पाइ ॥
हरि संगि रंग करती महा केल ॥१॥

(पन्ना १२२९)

गुरमुख जानता है कि परमात्मा की शरण में ही जीवन का आनंद है। परमात्मा से प्रेम बढ़ता जाता है तो आनंद भी बढ़ता जाता है।

पतित पावनु भगति बछलु भै हरन तारन तरन ॥१॥रहाउ॥
नैन तिपते दरसु पेखि जसु तोखि सुनत करन ॥१॥

(पन्ना १३०६)

परमात्मा दयालु है, अपने भक्तों का सहायक है, सारे कष्टों से मुक्ति दिलाने वाला है। उसके दर्शन करके ही गुरसिक्ख के नयन तृप्त होते हैं

और उसकी बात ही कानों को भली लगती है। यही तो प्रेम है। यह सच्चा प्रेम है।

अंदरि सचा नेहु लाइआ प्रीतम आपणै ॥
तनु मनु होइ निहालु जा गुरु देखा साम्हणे ॥
(पन्ना ७५८)

जिसके मन में परमात्मा की सच्ची प्रीति बस रही है वह परमात्मा से जुड़ कर निहाल हो जाता है। वास्तव में यह परमात्मा और उसके प्रेम की शक्ति है जो मनुष्य को निर्भय, सहज और सानंद कर देती है। परमात्मा के अतिरिक्त और किसी में इतनी सामर्थ्य नहीं है कि जो इस तरह कृपा कर सके और जीवन को सुखद बना सके। परमात्मा की प्रीति एक ऐसा सुदृढ़ आधार और एक ऐसी विलक्षण पूंजी है जिस पर न तो कोई आघात किया जा सकता है और न ही उसका हरण हो सकता है। सभी सांसारिक प्रेम घटते, बढ़ते, टूटते रहते हैं, लेकिन परमात्मा का प्रेम निश्चल है।

एको निहचल नाम धनु होरु धनु आवै जाइ ॥
इसु धन कउ तसकरु जोहि न सकई ना ओचका लै जाइ ॥
इहु हरि धनु जीऐ सेती रवि रहिआ जीऐ नाले जाइ ॥
पूरे गुर ते पाईऐ मनमुखि पलै न पाइ ॥
धनु वापारी नानका जिन्हा नाम धनु खटिआ आइ ॥ *(पन्ना ५११)*

उपरोक्त गुरु-वचन में उस मनुष्य की सहायता की गई है जिसने सांसारिक वस्तुओं-सम्बंधों से प्रेम त्याग कर परमात्मा से प्रेम करने की राह पकड़ी है, क्योंकि सांसारिक वस्तुएं-सम्बंध यहीं रह जाने वाले हैं, जबकि परमात्मा से किया प्रेम सदा साथ रहने वाला है। परमात्मा से प्रेम क्यों साथ रहने वाला है, इसका कारण इसी गुरु-वचन में आगे निम्न प्रकार बताया गया है :

मेरा साहिबु अति वडा सचु गहिर गंभीरा ॥
सभु जगु तिस कै वसि है सभु तिस का चीरा ॥
गुर परसादी पाईऐ निहचलु धनु धीरा ॥
किरपा ते हरि मनि वसै भेटै गुरु सूरा ॥
गुणवंती सालाहिआ सदा थिरु निहचलु हरि पूरा ॥
(पन्ना ५११)

गुरु-वचन के अनुसार परमात्मा का प्रेम इसलिए सच्चा है क्योंकि परमात्मा ही एक मात्र सच है संसार में। वही गुणों से भरपूर और ज्ञानवान है। वह सर्वोच्च सत्ता है जिसके नियंत्रण में सारी सृष्टि चल रही है। परमात्मा, क्योंकि सम्पूर्ण है, इसलिए वही समर्थ है सहजता प्रदान करने के लिए। परमात्मा जब कृपा करता है तो ऐसी अवस्था बन जाती है जो फिर बनी रहती है, भंग नहीं होती। जब परमात्मा के प्रेम का रंग लग जाता है तो सदैव परमात्मा ही चेतना में रहता है। सारे सुख परमात्मा के प्रेम में ही प्राप्त होते हैं और अन्य कोई सांसारिक आशा शेष नहीं रहती, क्योंकि जीव को परमात्मा की समझ आ जाती है, कोई भी बात उसे दुख नहीं पहुंचाती, कभी भी उसे शोक नहीं होता।

धीरउ सुनि धीरउ प्रभ कउ ॥१॥रहाउ॥
जीअ प्रान मनु तनु सभु अरपउ नीरउ पेखि प्रभ कउ नीरउ ॥१॥
बेसुमार बेअंतु बड दाता मनहि गहीरउ पेखि प्रभ कउ ॥२॥
जो चाहउ सोई सोई पावउ आसा मनसा पूरउ जपि प्रभ कउ ॥३॥
गुर प्रसादि नानक मनि वसिआ दुखि न कबहू झूरउ बुझि प्रभ कउ ॥४॥ *(पन्ना ७००)*

परमात्मा से प्रेम करने से पहले उसे बूझना-जानना आवश्यक है-- *". . बूझि प्रभ*

कउ ॥" जब तक गुरसिक्ख के पास कारण नहीं है तब तक वह 'किस और कैसे परमात्मा' के संशय में ही पड़ा रहेगा। जब तक गुरसिक्ख यह जान कर विश्वास नहीं कर लेता कि परमात्मा गुणों का अटूट भंडार, सर्वोच्च, समर्थ, दयालु, दुख दूर करने वाला, सुख प्रदान करने वाला, मोह-माया से मुक्त कर सहायता प्रदान करने वाला, भय दूर कर निर्भय करने वाला, अंत तक सहायक और आवागमन से मुक्त करने वाला एकमात्र दाता है, उसके समान कोई और नहीं है, तब तक उसका मन आश्वस्त नहीं होता कि इस मार्ग पर ही उसके जीवन का समाधान संभव है। यह आश्वस्तता परमात्मा में उसकी आस्था को दृढ़ करने में सहायक होती है। परमात्मा में सच्ची आस्था, उसके प्रति सच्चा प्रेम वही है जब गुरसिक्ख यह दृढ़ता से माने कि परमात्मा ही उसका सहायक, उस पर दया करने वाला, उसकी पुकार को सुनने वाला है :

भगता का बोलिआ परवाणु है दरगह पवै थाइ ॥
भगता तेरी टेक रते सचि नाइ ॥
जिस नो होइ क्रिपालु तिस का दूखु जाइ ॥
भगत तेरे दइआल ओन्हा मिहर पाइ ॥
दूखु दरदु वड रोगु न पोहे तिसु माइ ॥
भगता एहु अधारु गुण गोविंद माइ ॥
सदा सदा दिनु रैणि इको इकु धिआइ ॥
पीवति अंम्रित नामु जन नामे रहे अघाइ ॥
(पन्ना ५२१)

गुरसिक्ख के मन में जब विश्वास होता है कि दुख-कष्ट, माया, विकार आदि उसे छू भी नहीं सकते, क्योंकि वह परमात्मा की शरण में पहुंच गया है और इस विश्वास से वह दिन-रात सदा परमात्मा में रमा रहता है तो उसे तृप्ति प्राप्त हो जाती है तथा ऐसी दृढ़ आस्था वाला गुरसिक्ख जब कोई कामना करता है तो परमात्मा उसे सहर्ष पूर्ण करता है।

गुरसिक्ख अपना सिर हथेली पर लेकर परमात्मा के मार्ग पर चलता है, तब परमात्मा अपनी कृपा उस पर करता है।

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

विकास जारी है . . .।

जंगल कटे, लगे उद्योग
उनसे फिर बढ़ता उपभोग
भोगों ने उपजाये रोग
नई दवा की करते खोज
विकास जारी है . . .।१।

'कुदरत जीत', सफलता पाई
भोग बढ़ा, धरती गरमाई
गरमाहट ने नदी सुखाई
'नदी बचाओ समिति' बनाई
विकास जारी है . . .।२।

ठंडक का आदी बनवाया
ए सी-फ्रिज़ घर-घर पहुंचाया
ओज़ोन पर्त में छेद बनाया
'चिंतन-सम्मेलन' करवाया
विकास जारी है . . .।३।

बिजली के उपकरण बनाये
बिजली हेतु बांध बनाये
बांध बनाकर नगर डुबाये
'पुनर्वास केंद्र' खुलवाये
विकास जारी है . . .।४।

खूब रसायन खाद लगाई
धरती चूसी, फसल बढ़ाई
मृदा प्रदूषित, स्वाद भी बदला
श्रम को तकनीक ने निगला
विकास जारी है . . .।५।

आज़ादी का जश्न मनाया
मल्टीनेशनल को बुलवाया
जिन्हें भगाया उन्हें जमाया
खुद भी 'खाया', उन्हें 'खिलाया'
विकास जारी है . . .।६।

टी वी-फिल्म की लाये बाढ़
इच्छाओं के खोले द्वार
मांग बढ़ी, सब कुछ बाज़ार
नये जमाने के देखो 'संस्कार'
विकास जारी है . . .।७।

लाज-हया की रही न उलझन
तोड़ दिये मर्यादा-बंधन
भांति-भांति का लाये फैशन
'लिव-इन' हो गये सभी रिलेशन
विकास जारी है . . .।८।

कानूनों में छेद हो गये
ताकतवर बेखौफ हो गये
पीड़ित पर जब जुल्म बढ़ गये
नाना 'जांच-आयोग' बन गये
विकास जारी है . . .।९।

सच में देश हुआ बहुरंग
एक आदमी, सौ-सौ रंग
कितने रंग दिखायें हम
जितना बोलें उतना कम
विकास जारी है . . .।१०।

प्रार्थना

मुख से कहता रहता हूं, तुम पर मुझे भरोसा। किंतु असल में भवसागर में, रहता डरा-डरा-सा। ऐसी कर दो कृपा कि तुम पर हो विश्वास अटूट। श्वास भले ही छूटे पर, विश्वास न जाये टूट। जो कुछ संशय मेरे मन में, उसको दूर भगा दो। दृढ़ निष्ठा हो जाये तुम में, ऐसी लगन लगा दो। सही राह पर मुझे चला दो, दिशा भटक न जाऊं। धीरे भी यदि चलूं प्रभु तो, मुमकिन है मंज़िल पाऊं।

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.)। मो. : ०९४११६०७६७२

ख़बरनामा

श्री अकाल तख़्त साहिब हमारे पूर्वजों की ऐतिहासिक शक्ति एवं फ़तह का प्रतीक है : ज्ञानी गुरबचन सिंघ

श्री अमृतसर : ६ जून : जून, १९८४ ई में श्री हरिमंदर साहिब, श्री अकाल तख़्त साहिब तथा अन्य ऐतिहासिक गुरुद्वारों पर तत्कालीन भारत सरकार द्वारा अपने ही देश की सेना द्वारा हमला करवाकर भक्ति एवं शक्ति के प्रतीक श्री अकाल तख़्त साहिब को ध्वस्त कर दिया तथा हज़ारों निर्दोष सिक्खों को शहीद कर दिया। भारतीय सेना द्वारा की गई इस वहशियाना कार्यवाही का डटकर विरोध करते हुए दमदमी टकसाल के मुखी संत जरनैल सिंघ जी खालसा भिंडरांवाले, भाई अमरीक सिंघ, बाबा ठारा सिंघ तथा जनरल शबेग सिंघ के नेतृत्व में सैकड़ों जांबाज सिंघ श्री हरिमंदर साहिब के परिसर में शहीद हो गए। जून, १९८४ ई के इस हमले में शहीद हुए सिंघों-सिंघणियों की २८वीं पावन याद को समर्पित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा रखवाए श्री अखंड पाठ साहिब के भोग डाले गए।

शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने कहा कि जून, १९८४ के घल्लूघारे के समय जाबिर हुक्मरानों ने सिक्खों के अस्तित्व, हस्ती तथा पहचान को मलियामेट करने का नापाक यत्न किया। उन्होंने कहा कि यह भी हकीकत है कि श्री हरिमंदर साहिब तथा श्री अकाल तख़्त साहिब अपने रचना-काल से लेकर ही अत्याचारी तथा अन्यायकारी हाकिमों की आंख में चुभते रहे हैं। उन्होंने कहा कि मीरी-पीरी के मालिक श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा सृजित श्री अकाल तख़्त साहिब हमारे पूर्वजों की ऐतिहासिक शक्ति एवं फ़तह का प्रतीक है। हमारे धर्मवीर शूरवीरों ने श्री अकाल तख़्त साहिब से योग्य अगुआई लेकर सदा ही अपना शानदार गौरवमयी इतिहास रचा है। उन्होंने कहा कि समूह मानवता के कल्याण तथा सरबत्त के भले की अरदास सिक्ख पंथ का महान सिद्धांत है। उन्होंने कहा कि सिक्ख पंथ सामाजिक बुराइयों तथा मानव गुलामी के विरुद्ध सदा ही जूझता रहा है और जूझता रहेगा। उन्होंने कहा कि ६ जून का दिन समूह सिक्ख पंथ को भारत सरकार की उस सोची-समझी साजिश तथा घिनौनी हरकत की कड़वी याद दिलाता है जब पंचम पातशाह, शहीदों के सिरताज श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी दिवस मनाने के लिए एकत्र हुए हज़ारों सिक्ख श्रद्धालुओं को भारतीय सेना की गोलियों का शिकार होना पड़ा। यह जुल्म एवं जब्र की इंतहा थी जब श्री हरिमंदर साहिब तथा श्री अकाल तख़्त साहिब के साथ-साथ अन्य अनेकों ऐतिहासिक गुरुधामों पर भी हमला किया गया। उन्होंने कहा कि जून, १९८४ में ही बहुत-से निर्दोष सिक्खों को पकड़कर काल-कोठरियों में डाल दिया गया, जिनमें से कुछ तो दशकों की कैद के बाद रिहा हो गए तथा शेष अभी भी

बेवजह जेलों में बंद कर रखे हैं। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता है कि पंथक रूप से सरकार पर दबाव डालकर इन निर्दोष सिक्खों को रिहा करवाया जाए।

इस समारोह में श्री हरिमंदर साहिब एवं श्री अकाल तख़्त साहिब की आन-बान-शान की रक्षा के लिए संत जरनैल सिंघ जी खालसा भिंडरांवाले सहित शहीदों की 'शहीदी यादगार' का शिलान्यास पांच सिंघ साहिबान तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ द्वारा रखा गया। इस अवसर पर जेल में नज़रबंद भाई बलवंत सिंघ राजोआणा को पांच सिंघ साहिबान द्वारा 'जिंदा शहीद' का खिताब भी दिया गया। यह खिताब भाई बलवंत सिंघ राजोआणा की बहन बीबी कमलदीप कौर ने प्राप्त किया।

इस अवसर पर पत्रकारों से बातचीत करते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि जो कौम अपने इतिहास को याद नहीं रखती वो सदा के लिए दुनिया के नक्शे से मिट जाती है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सिक्खों की भावनाओं के अनुसार १९८४ के शहीदों की यादगार बनाने का फैसला करके कार सेवा दमदमी टकसाल के मुखी बाबा हरनाम सिंघ को सौंपी गई है।

इस समारोह में शहीदों के पारिवारिक सदस्यों के अलावा धार्मिक एवं सामाजिक जत्थेबंदियों के मुखिया तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से सम्बंधित सदस्य साहिबान, अधिकारीगण, कर्मचारी वर्ग के अलावा देश-विदेश की संगत भारी संख्या में उपस्थित थी।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने नए थल सेनाध्यक्ष जनरल बिकरम सिंघ को बधाई दी

श्री अमृतसर : २ जून : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने जनरल बिकरम सिंघ को भारत के थल सेनाध्यक्ष बनने पर बधाई देते हुए आशा प्रकट की कि जनरल बिकरम सिंघ अपने सेवा-काल में बढ़िया कार्यगुजारी के साथ-साथ सिक्ख कौम को सम्मान प्रदान करेंगे और देश के लिए नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि जून, १९८४ में किए गए हमले के समय सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी में रखे बहुमूल्य सिक्ख साहित्य को सेना अपने साथ ले गई थी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा बार-बार यत्न किया जाता रहा कि सेना द्वारा सिक्ख पंथ का यह बहुमूल्य साहित्य-खज़ाना वापिस किया जाए, मगर इस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया गया। उन्होंने कहा कि हमें आशा है कि जनरल स. बिकरम सिंघ इस तरफ विशेष ध्यान देंगे तथा सेना में विभिन्न कंपनियों में बने गुरुद्वारा साहिबान की सेवा-संभाल एवं मर्यादा की तरफ भी विशेष रुचि दिखाएंगे। उन्होंने इस बात की भी मांग की कि सेना में सिक्ख नौजवानों की कम हो रही गिनती को सही अनुपात में लाया जाए।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०७-२०१२